गणतंत्र दिवस परेड
Republic Day Parade

सत्यमेव जयते

26 जनवरी, 2015 (माघ 7, 1936)
26 January, 2015 (7 Magha, 1936)

सत्यमेव जयते

गणतंत्र दिवस परेड
Republic Day Parade

26 जनवरी 2015 (माघ 7, शक संवत् 1936)

26 January 2015 (7 Magha, Saka Samvat 1936)

स्वागतम्

Welcome

कार्यक्रम	Programme
0957 बजे राष्ट्रपति का राजकीय सम्मान सहित आगमन।	0957 Hrs. The President arrives in State.
प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति की अगवानी।	The Prime Minister receives the President.
प्रधानमंत्री द्वारा राष्ट्रपति से रक्षा मंत्री, रक्षा राज्य मंत्री, तीनों सेनाध्यक्षों तथा रक्षा सचिव का परिचय।	The Prime Minister presents to the President, Raksha Mantri, Raksha Rajya Mantri, the three Service Chiefs and Defence Secretary.
राष्ट्रपति तथा प्रधानमंत्री का मंच की ओर प्रस्थान।	The President and the Prime Minister proceed to the rostrum.
राष्ट्रीय ध्वज फहराया जाता है तथा राष्ट्रपति के अंगरक्षक राष्ट्रीय सलामी देते हैं। बैंड द्वारा राष्ट्रगान प्रस्तुति तथा 21 तोपों की सलामी।	The National Flag is unfurled and the President's Body Guard presents the National Salute. The Band plays the National Anthem and a 21-Gun Salute is fired.
गणतंत्र दिवस परेड आरंभ होती है।	The Republic Day Parade commences.
सांस्कृतिक झांकी।	The Cultural Pageant.
मोटर साइकिलों पर करतब।	Motor Cycle Display.
विमानों द्वारा सलामी।	Flypast.
राष्ट्रीय सलामी।	National Salute.
राष्ट्रपति का राजकीय सम्मान सहित प्रस्थान।	The President departs in State.

परेड क्रम

भारतीय वायु सेना के हेलीकॉप्टरों द्वारा पुष्प वर्षा

परेड कमांडर

परेड उप–कमांडर

परमवीर चक्र तथा अशोक चक्र पुरस्कार विजेता

सेना

सवार दस्ते

61 घुड़सवार दस्ता

मैकेनाइज्ड दस्ते

टैंक टी–90

बाल्बवे मशीन पिकेट (बीएमपी II/IIके)

ट्राल सहित टैंक टी–72

पिनाका

ब्रह्मोस

त्रिआयामी रणनीतिक नियंत्रण रडार

गतिशील उपग्रह (एसओटीएम)

रैडसैट

उन्नत हल्के हेलीकॉप्टरों द्वारा सलामी

झांकी – सशस्त्र बल महिला माउन्ट एवरेस्ट विजेता

मार्चिंग दस्ते

महिला अधिकारियों की टुकड़ी

तोपखाना केन्द्र, हैदराबाद : बैंड धुन
बॉम्बे इंजीनियर ग्रुप तथा केन्द्र, किरकी *"रोशनी"*

गार्डस रेजिमेंट ब्रिगेड

The Order of March

Showering of Flower Petals by Helicopters

Parade Commander

Parade Second-in-Command

Param Vir Chakra and Ashok Chakra Awardees

Army

Mounted Column

61 Cavalry

Mechanised Columns

Tank T-90

Ballbway Machine Pikate (BMP II/IIK)

Tank T-72 with Trawl

PINAKA

BRAHMOS

3 Dimensional Tactical Control Radar

Satellite on the Move (SOTM)

RADSAT

Fly past by Advanced Light Helicopters

Tableau – Armed Forces' Women Mt. Everest Summiteers

Marching Contingents

Women Officers' Contingent

Artillery Centre, Hyderabad : Band playing
Bombay Engineer Group & Centre, Kirkee *"Roshni"*

Brigade of the Guards Regiment

ग्रेनेडियर्स रेजिमेंट		Grenadiers Regiment	
मैकेनाइज्ड इन्फैंट्री रेजिमेंटल केन्द्र मद्रास रेजिमेंटल केन्द्र	: बैंड धुन *"रश्मि"*	Mechanised Infantry Regimental Centre Madras Regimental Centre	: Band playing *"Rashmi"*
जाट रेजिमेंट		Jat Regiment	
सिख रेजिमेंट		Sikh Regiment	
असम रेजिमेंटल केन्द्र 14 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र	: बैंड धुन *"सैम बहादुर"*	Assam Regimental Centre 14 Gorkha Training Centre	: Band playing *"Sam Bahadur"*
कुमाऊँ रेजिमेंट		Kumaon Regiment	
जम्मू और कश्मीर राइफल्स रेजिमेंट		Jammu & Kashmir Rifles Regiment	
39 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र 11 गोरखा राइफल्स रेजिमेंटल केन्द्र	: बैंड धुन *"आर्मी स्टार"*	39 Gorkha Training Centre 11 Gorkha Rifles Regimental Centre	: Band playing *"Army Star"*
14 गोरखा प्रशिक्षण केन्द्र		14 Gorkha Training Centre	
प्रादेशिक सेना (पंजाब)		Territorial Army (Punjab)	
1 विद्युतीय एवं यांत्रिकीय इंजीनियरिंग केन्द्र 3 विद्युतीय एवं यांत्रिकीय इंजीनियरिंग केन्द्र	: बैंड धुन *"शेर–ए–जवान"*	1 Electrical & Mechanical Engineering Centre 3 Electrical & Mechanical Engineering Centre	: Band playing *"Sher-e-Jawan"*
नौसेना		**Navy**	
नौसेना की मार्च करती हुई टुकड़ी		Navy Marching Contingent	
नौसेना ब्रास बैंड	: बैंड धुन *"जय भारती"*	Naval Brass Band	: Band playing *"Jai Bharti"*
नौसेना महिला अधिकारियों टुकड़ी		Naval Women Officers Contingent	
झांकी	: भारतीय नौसेना और नारी शक्ति	Tableau	: Bhartiya Nausena aur Nari Shakti

झांकी	: भारतीय नौसेना – आत्मनिर्भरता और स्वदेशीकरण
Tableau	: Indian Navy – Self Reliance and Indigenisation

वायु सेना

वायु सेना महिला अधिकारियों की मार्च करती हुई टुकड़ी	
वायु सेना बैंड	: बैंड धुन *"साउंड बैरिअर"*
वायु सेना की मार्च करती हुई टुकड़ी	
वाहन दस्ता (1965 युद्ध का 50वाँ स्मरणोत्सव वर्ष)	

रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन

आकाश (सेना रूपांतर)	
शस्त्र खोजी रडार	

पूर्व सैनिक

13 ग्रेनेडियर्स 6/8 गोरखा राइफल्स	: बैंड धुन *"हँसते लुशाई"*
पूर्व सैनिकों की मार्च करती हुई टुकड़ी	

अर्ध–सैनिक तथा अन्य सहायक सिविल बल

बैंडः सीमा सुरक्षा बल	: बैंड धुन *"सारे जहां से अच्छा हिन्दुस्तां हमारा"*
सीमा सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी	
सीमा सुरक्षा बल ऊंटों की टुकड़ी	

Air Force

Air Force Women Officers Marching Contingent	
Air Force Band	: Band playing *"Sound Barrier"*
Air Force Marching Contingent	
Vehicular Column (Commemoration of 50 years of 1965 War)	

DRDO

Akash (Army Version)	
Weapon Locating Radar	

Ex-Servicemen

13 Grenadiers 6/8 Gorkha Rifles	: Band playing *"Hanste Lushai"*
Ex-Servicemen Marching Contingent	

Para-Military and Other Auxiliary Civil Forces

Band: BSF	: Band playing *"Sare Jahan Se Achha Hindustan Hamara"*
BSF Marching Contingent	
BSF Camel Contingent	

बैंड : सीमा सुरक्षा बल ऊंट	: बैंड धुन *"हम हैं सीमा सुरक्षा बल"*	Band: BSF Camel	: Band playing *"Hum Hain Seema Suraksha Bal"*
असम राइफल्स की मार्च करती हुई टुकड़ी		Assam Rifles Marching Contingent	
बैंड : असम राइफल्स	: बैंड धुन *"असम राइफल्स के सिपाही"*	Band: Assam Rifles	: Band playing *"Assam Rifles ke Sipahi"*
तटरक्षक बल की मार्च करती हुई टुकड़ी		Coast Guard Marching Contingent	
बैंड : केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल	: बैंड धुन *"देश के हम हैं रक्षक"*	Band: CRPF	: Band playing *"Desh Ke Hum Hain Rakshak"*
केन्द्रीय रिजर्व पुलिस बल की मार्च करती हुई टुकड़ी		CRPF Marching Contingent	
बैंड : भारत तिब्बत सीमा पुलिस	: बैंड धुन *"कदम–कदम बढ़ाए जा"*	Band: ITBP	: Band playing *"Kadam Kadam Baraye Ja"*
भारत तिब्बत सीमा पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी		ITBP Marching Contingent	
बैंड : केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल	: बैंड धुन *"अमर सेनानी"*	Band: CISF	: Band playing *"Amar Senani"*
केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी		CISF Marching Contingent	
बैंड : सशस्त्र सीमा बल	: बैंड धुन *"जोश भरा है सीने में"*	Band: SSB	: Band playing *"Josh Bhara Hai Seene Main"*
सशस्त्र सीमा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी		SSB Marching Contingent	
बैंड : रेलवे सुरक्षा बल	: बैंड धुन *"भारत के जवान"*	Band: RPF	: Band playing *"Bharat Ke Jawan"*
रेलवे सुरक्षा बल की मार्च करती हुई टुकड़ी		RPF Marching Contingent	
बैंड : दिल्ली पुलिस	: बैंड धुन *"दिल्ली पुलिस गान"*	Band: Delhi Police	: Band playing *"Delhi Police Anthem"*

दिल्ली पुलिस की मार्च करती हुई टुकड़ी

Delhi Police Marching Contingent

राष्ट्रीय कैडेट कोर (एन सी सी)

National Cadet Corps (NCC)

बैंड : राष्ट्रीय कैडेट कोर के छात्र : बैंड धुन *"कदम कदम बढ़ाए जा"*

Band: Boys (NCC) : Band playing *"Kadam Kadam Badhayen Ja"*

छात्रों की मार्च करती हुई टुकड़ी

Boys Marching Contingent

बैंड : राष्ट्रीय कैडेट कोर की छात्राएं : बैंड धुन *"हम होंगे कामयाब"*

Band: Girls (NCC) : Band playing *"Hum Honge Kamyab"*

छात्राओं की मार्च करती हुई टुकड़ी

Girls Marching Contingent

राष्ट्रीय सेवा योजना (एन एस एस)

National Service Scheme (NSS)

सामूहिक पाइप और ड्रम बैंड : बैंड धुन *"फूलों की घाटी"*

Massed Pipes & Drums Bands : Band Playing *"Phoolon Ki Ghati"*

राष्ट्रीय सेवा योजना की मार्च करती हुई टुकड़ी

National Service Scheme Marching Contingent

सांस्कृतिक प्रस्तुति

The Cultural Pageant

झांकियाँ : पच्चीस

Tableaux : Twenty Five

बहादुर बच्चे

The Brave Children

खुली जीपों में राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार विजेता बच्चे

National Bravery Award Winning Children in open Jeeps

बच्चों की प्रस्तुति

Children's Pageant

स्कूली बच्चों के कार्यक्रम :

School Children Items :

1. पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर
2. राजकीय उच्चतर माध्यमिक बालिका विद्यालय, 'ए' ब्लॉक, जनकपुरी, दिल्ली

1. West Zone Cultural Centre, Udaipur
2. Government Girls Senior Secondary School, 'A' Block, Janakpuri, Delhi

3. राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, नत्थूपुरा, दिल्ली

4. रेड रोजेज पब्लिक स्कूल, साकेत, नई दिल्ली

5. दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर

6. केन्द्रीय विद्यालय, सेक्टर–8, आर. के. पुरम, नई दिल्ली

मोटर साइकिलों पर करतब : सीमा सुरक्षा बल

विमानों द्वारा सलामी*

गुब्बारों का छोड़ा जाना : भारत मौसम विज्ञान विभाग

3. Government Girls Senior Secondary School, Nathupura, Delhi

4. Red Roses Public School, Saket, New Delhi

5. South Central Zone Cultural Centre, Nagpur

6. Kendriya Vidyalaya, Sector-8, R. K. Puram, New Delhi

Motor Cycle Display : Border Security Force

Fly-Past*

Release of balloons : India Meteorological Department

* *मौसम अनुकूल रहने पर।*

* *If weather conditions permit.*

12

सांस्कृतिक प्रस्तुति

आज भारत अपना 66वां गणतंत्र दिवस मना रहा है। यह सांस्कृतिक प्रस्तुति हमारी प्राचीन सभ्यता, सांस्कृतिक विविधता और प्रगति की झलक प्रस्तुत करती है जो भारत के गौरवशाली अतीत का प्रतीक है तथा समृद्ध और खुशहाल भविष्य के प्रति देशवासियों की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करती है।

रंग बिरगीं झांकियों का वर्ण–विन्यास भारत के सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और प्रौद्योगिकीय पहलुओं का चित्रण करता है। इन झांकियों में हमारे भौगोलिक सौंदर्य तथा वास्तु–शिल्पीय धरोहर को दिखाया गया है।

CULTURAL PAGEANT

Today, India celebrates its 66th Republic Day. The cultural pageant presents a glimpse of our ancient civilization, cultural diversity and progress; it symbolises both India's glorious past and reflects the citizens' aspirations for a prosperous and happy tomorrow.

The array of colourful tableaux depicts the social, cultural, economic and technological facets of India, capturing both the beauty of our landscape and our architectural heritage.

चन्नपटना के खिलौने

कर्नाटक राज्य की झांकी में बेंगलुरू के निकट चन्नपटना में रंगबिरंगे लकड़ी और रोगन सामग्री के खिलौने बनाने की परंपरागत शिल्प कला को खिलौनों की समृद्ध और आकर्षक साज–सज्जा के प्रदर्शन के जरिए सजीव रूप में चित्रित किया गया है।

यद्यपि चन्नपटना के शिल्पकार, विविध रंगों, आकारों, आकृतियों और रूप–रेखाओं के खिलौनों तथा गुड्डियों को बनाने की कला में पारंगत थे, फिर भी टीपू सुल्तान ने स्थानीय शिल्पियों को प्रशिक्षित करने के लिए फारसी व्यक्तियों को लाकर प्रोत्साहन प्रदान किया। चन्नपटना के खिलौनों की सदियों पुरानी कला विश्वप्रसिद्ध हो गई है और इसने अपनी एक अलग भौगोलिक पहचान अर्जित की है।

झांकी के अग्रिम भाग में खिलौने बनाते हुए शिल्पकार युगल के एक विशालकाय मॉडल को प्रदर्शित किया गया है। इसके उपरान्त शैल अश्वों पर एक बालिका का सम्मोहक दृश्य और मध्य में घूमता हुआ एक झूला तथा पिछले भाग में अश्वपीठ पर राजा और रानी रूपी खिलौनों को दिखाया गया है। इसे ओर सुंदर व आकर्षक बनाने के लिए पक्षियों, पशुओं, मनकों और बैंड सेट के खिलौने रखे गए हैं जिन्होंने युगों से भारत और विदेश में बच्चों और बड़ों की कल्पनाओं को प्रभावित किया है।

–कर्नाटक

Channapatna Toys

The traditional craft of making colourful wooden and lacquer-ware toys, at Channapatana, near Bengaluru, comes alive in Karnataka's tableau through display of rich and attractive array of toys.

Though artisans of Channapatna were masters of the craft of making toys and dolls of varied hues, sizes, shapes and designs, Tipu Sultan provided the support by bringing Persian men to train local craftsmen. The centuries-old craft of Channapatna Toys has become world-famous and has acquired its own distinct Geographical identity.

The tableau, in the front, displays a larger than life model of a couple engaged in the craft of making toys. It is followed by the bewitching spectacle of a girl on rocking horse and a revolving swing in the centre with King and Queen on horseback at the rear portion. Adding to the splendour are toys of birds, animals, beads and band-set that have captured the imagination of children and adults alike in India and abroad over the ages.

–KARNATAKA

संक्रान्ति सम्बरालू

आन्ध्र प्रदेश का कृषि उत्सव–संक्रान्ति बड़े पैमाने पर चार दिनों तक मनाया जाने वाला तथा सांस्कृतिक उल्लस के प्रमुख उत्सवों में से एक है। इसके प्रत्येक दिन का अपना महत्व है इसे पारम्परिक सजावटों के साथ ग्रामों और शहरों में अलग–अलग तरीके से बनाया जाता है। यह फसल के तैयार होने के समय का द्योतक है।

यह उत्सव उनके घरों के सामने अलाव जलाकर भोगी मनाने से प्रारंभ होता है। कृषक अपने श्रमिकों और परम्परागत कलाकारों को नए वस्त्र, उपहार और उत्पादों से एक हिस्से का दान करते हैं। पुष्प पत्तियों का प्रयोग करके रंगीन 'रंगोलियों' से गलियों और घरों के परिसरों के बीच की सजावट की जाती है। बालिकाएं इसके चारों ओर गायन और नृत्य करती हैं।

आंध्र प्रदेश की झांकी के अग्र–भाग में संगीतज्ञों के साथ रंगारंग रूप में सजाए गए 'गंगीरेड्डु' धान से भरे हुए 'गरिसालु' को प्रस्तुत किया गया है और पश्च भाग कृषि उत्सव के दौरान 'गोपुजा' की प्रस्तुति को दर्शाते हुए संक्रान्ति सम्बरालू को प्रदर्शित कर रही है। पारम्परिक ग्राम्य पृष्ठभूमि के साथ इस उत्सव के समय घरों को 'रंगोलियों' से सजाया जाता है और बालिकाएं 'गोब्बेमलु' के चारों ओर नृत्य करती हैं। पारम्परिक कलाकारों को इस झांकी के साथ लोकगीत गाते और नाचते हुए प्रस्तुत किया गया है।

–आंध्र प्रदेश

Sankranthi Sambaralu

The agrarian festival of Sankranthi is one of the major cultural rejoice for four days in Andhra Pradesh in grand scale. Each day has its own significance and celebrates differently in villages and towns with traditional decorations. It marks the beginning of the harvest season.

The festival begins with Bhogi celebrate with bonfires in front of their houses. Farmers offer new cloths, gifts and a share of produce to their workers and traditional artists. Streets and premises of houses are decorated with colourful 'Rangolis', using flower petals in middle. Young girls sing and dance around it.

Andhra Pradesh tableau presents of Sankranthi sambaralu by depicting colourfully decorated 'Gangireddu' with musicians, 'Garisalu' filled with paddy in front portion and performing 'Gopuja' at tail end as marks this agrarian festival. Kite festival with village background traditionally decorated house with 'Rangolis' and girls dancing around 'Gobbemmalu'. The traditional artists are shown with tableau dancing and singing folk songs.

–ANDHRA PRADESH

15

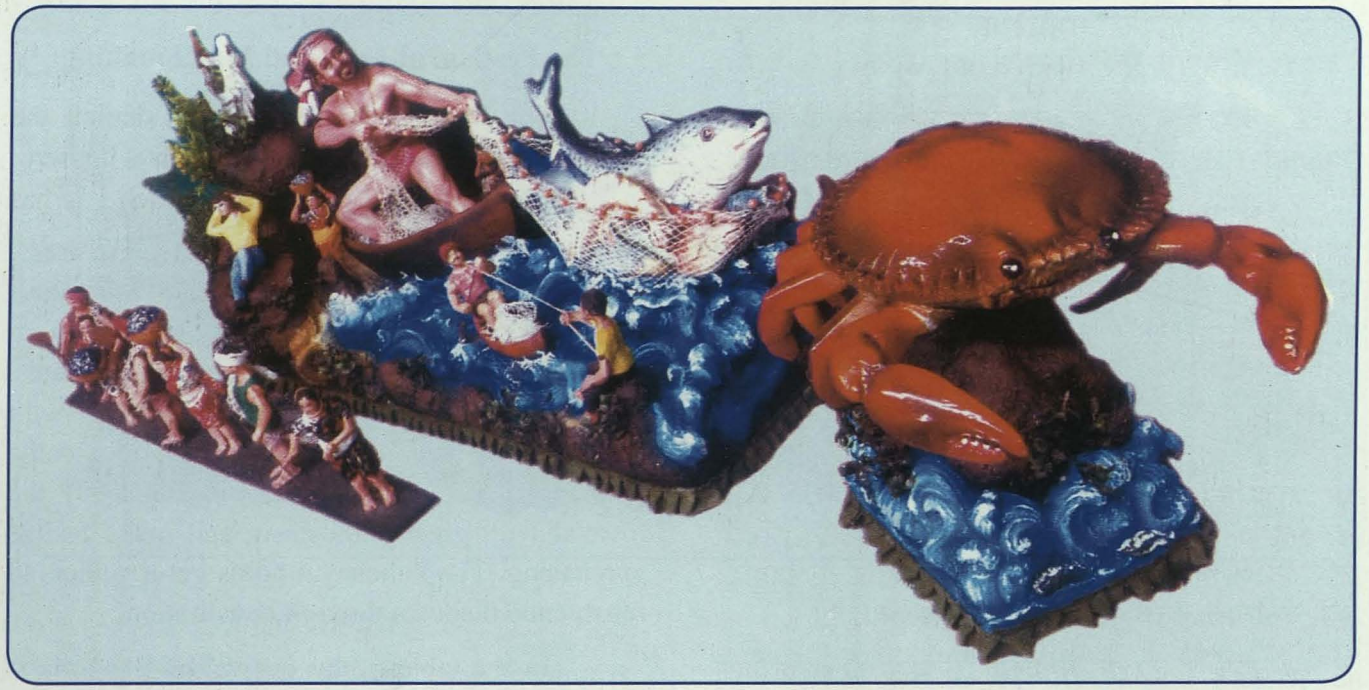

गोवा की मत्स्य अर्थव्यवस्था

गोवा राज्य की भूमि मनमोहक हरियाली और स्वच्छ श्वेत बालू से परिपूर्ण है। गोवा की रंगबिरंगी झांकी इस राज्य की फलती–फूलती मत्स्य अर्थव्यवस्था को प्रदर्शित करती है।

इस राज्य की लम्बी तटीय रेखा मत्स्य संसाधनों से समृद्ध है जिसके कारण मछली गोवा के सभी जाति और धर्मों के लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण आहार है। इसका सांस्कृतिक पात्र मछुआरा (रामपोंकर) भिन्न–भिन्न प्रकार की मछलियों को पकड़ने के लिए मछली जाल (रेम्पोन), बड़ी और छोटी मछली पकड़ने की नावों से लेकर कांटे में फंसाकर मछली पकड़ने तक की विविध विधियों का प्रयोग करता है। मछुआरिन (नुस्टेकन्न) पकड़े गए केकड़ों (कर्ली), किंगफिश (विस्वान), लाल स्नेपर (तम्सो), बांगड़ा (बेंग्डो), झींगा (संग्टा) को बेचने के लिए बाजार में ले जाती हैं। गोवा में मछली पकड़ना युवाओं और उत्साहियों के लिए एक लोकप्रिय मनोरंजक गतिविधि भी है।

इस झांकी में मछुआरा समुदाय के सदस्य रामपोंकर को मछली पकड़ने के लिए रेम्पोन का प्रयोग करते हुए दर्शाया गया है जो मत्स्य अर्थव्यवस्था पर उनकी जीविका को प्रदर्शित करता है।

–गोवा

Fish Economy of Goa

Goa is a land blessed with mesmerising greenery and pristine white sands. Colourful Goa tableau displays the flourishing fishing economy of the state.

The State's long coastline is rich in fish resources which make it an important commodity of Goan diet, across the caste and religion. Its cultural character fisherman (Ramponkar) uses varied methods, right from fish-net (Rampon), big and small fishing boats to angling to catch a variety of fishes. The Fisherwomen (Nustekann) takes the catch - be it Crab (Kurli), Kingfish (Viswan), Red Snapper (Tamso), Mackrel (Bangdo), Prawns (Sungta) to the market for sale. Catching fish is also a popular recreational activity for young and enthusiasts in Goa.

The tableau features Ramponkar, member of the fishing community making use of Rampon to catch the fish, depicting their livelihood on fish economy.

–GOA

भगोरिया
प्रणय एवं उल्लास का उत्सव

मध्य प्रदेश की यह झांकी झबुआ जिले के अनोखे जनजातीय उत्सव 'भगोरिया' को चित्रित करती है।

भगोरिया प्रणय एवं उल्लास का उत्सव है और इसे होली से एक सप्ताह पूर्व प्रमुख रूप से भील और भिलाला जनजातियों की आबादी वाले क्षेत्रों में आयोजित किया जाता है। भगोरिया युवाओं और युवतियों को अपने लिए जीवन साथी चुनने का सुअवसर प्रदान करता है। चयन के उपरान्त उनको संक्षिप्त और सांकेतिक रूप में सहपलायन की अनुमति दी जाती है। जनजाति के लोग इस उत्सव में अत्यंत उत्साह के साथ शामिल होते हैं और उत्सव संबंधी खरीददारी करते हैं। पंचायत सुलह के जरिए विवादों का समाधान करने के लिए बैठक कराती है।

इस झांकी में भगोरिया उत्सव को सुरुचिपूर्ण तरीके से प्रदर्शित किया गया है। इस झांकी के अग्रभाग में भगोरिया के दौरान युवा भील युगल की विशाल आकृतियां एक दूसरे को गुलाल लगाने के पश्चात सहपलायन के लिए भागते हुए चित्रित की गई हैं। झांकी के पिछले भाग में भगोरिया हाट, भील नर्तकों और उनकी जीवन शैली प्रस्तुत की गई है। झांकी के दोनों तरफ जनजातीय नर्तक भील नृत्य करते हुए नजर आ रहे हैं।

–मध्य प्रदेश

Bhagoria
The Festival of Love and Matchmaking

The Madhya Pradesh Tableau depicts the unique tribal event "Bhagoria" of Jhabua district.

Bhagoria is a festival of love and matching and is held a week before Holi in areas, predominantly inhabited by Bhil and Bhilala tribes. Bhagoria provides an opportunity to the young boys and girls of the tribe to choose their life mates. After the choice, they are allowed to elope with their would-be spouse briefly and symbolically. The members of the tribe participate in the festival with great enthusiasm and make festive purchasing. The Panchayat holds get-togethers to resolve the disputes through conciliation.

In the tableau, the festival of Bhagoria is presented in true colours and spirit. The front portion of the tableau displays larger than life models of young bhil couple running away to elope after smearing gulal to each other during Bhagoria. Rear part shows the Bhagoria Haat, Bhil dancers and their life style. The tableau is accompanied on both sides by tribal dancers performing Bhil dance.

– MADHYA PRADESH

17

केदारनाथ

उत्तराखंड राज्य की यह झांकी भगवान शिव के बारह ज्योतिर्लिंगों में से एक केदारनाथ मंदिर की प्रतिकृति को चित्रित कर रही है। देवभूमि उत्तराखंड में चार धाम की पौराणिक महत्वता के कारण केदारनाथ विशेष महत्व रखता है।

अटूट धार्मिकता के साथ–साथ अपनी प्राकृतिक सुंदरता के कारण केदारनाथ सदैव लोगों की आस्था का केन्द्र रहा है। केदारनाथ लगभग 12000 फीट की ऊंचाई पर स्थित होने के कारण बर्फीले पहाड़ों की चोटियों से आच्छादित रहता है। केदारनाथ मंदिर के दर्शन करने के लिए तीर्थयात्री और पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं। भगवान शिव का शीर्ष जिसकी इस मंदिर में पूजा की जाती है, वह 6 फीट लंबे और 3 फीट ऊंचे त्रिकोणीय पत्थर के रूप में है। इसे इस मन्दिर में एक ऊंचे स्थान पर प्रतिस्थापित किया गया है। भगवान शिव के वाहक प्रतीक नंदी बैल को मंदिर परिसर में स्थापित किया गया है। यह मंदिर वास्तु शास्त्र का एक उत्कृष्ट उदाहरण है।

उत्तराखंड की इस झांकी के अग्रभाग में पवित्र बैल नंदी की विशाल प्रतिमा है। साधु–संतों और भक्तजनों को पूजा–अर्चना करने के लिए केदारनाथ के पावन मंदिर की ओर बढ़ते हुए भी चित्रित किया गया है। पंडितों को यज्ञों के दौरान धार्मिक अनुष्ठानों में व्यस्त दृश्य को भी दर्शाया गया है।

–उत्तराखंड

Kedarnath

The tableau of Uttarakhand presents an image of the Kedarnath temple - one of the twelfth Jyotirlinga of Lord Shiva. Kedarnath carries a special significance because of mythological importance of Char Dham in Devbhoomi Uttarakhand.

Due to its natural beauty, with inseparable spirituality, the Kedarnath has always remained at the centre of people's faith. Located at a height of about 12,000 feet, it is surrounded by icy peaked mountains. A large number of tourist and pilgrims visit Kedarnath temple. The head of the Lord Shiva which is worshiped in the Temple is in the form of a triangular stone - 6 feet in length and 3 feet in height, is placed in this temple on a high platform. Nandi, the bullock, a symbol of carrier of Lord Shiva has been established in temple complex. The temple is an excellent example of Vastu Shastra.

A larger than life size model of Nandi, the holy bullock, leads the Uttarakhand tableau. It also features saints and devotees moving towards the holy temple of Kedarnath for offering prayers. Sages have been shown engaged in performing rituals during the yagya.

–UTTARAKHAND

अतुल्य मजूली

असम की झांकी में मजूली – विश्व के आबादी वाले सबसे बड़े नदीय द्वीप और वैष्णवी संस्कृति के आराध्य स्थल जिसे वैष्णव संत श्रीमंत शंकरदेव द्वारा 16वीं शताब्दी में प्रतिस्थापित किया गया था, को दर्शाया गया है।

मजूली द्वीप पर 24 सत्र – असम के प्रसिद्ध वैष्णव मठ स्थित हैं। इन सत्रों में मूल्यवान हस्तलिपि पांडुलिपियाँ संरक्षित है जो वैष्णव संस्कृति के जीवन्त प्रतीक हैं। मजूली मिसिंग, देवरी, सोनोवाल, कचरी समुदायों से संबंधित इसके नृजातीय निवासियों की जीवंत और बहुरंगी संस्कृति से भी ओत–पोत है। मजूली का उत्कृष्ट और शान्त वातावरण बहुत से स्थानीय और प्रवासी पक्षियों को आकर्षित करता है। यह रहस्यमयी द्वीप आध्यत्मिक और सांस्कृतिक विरासत के साथ रमणीय वातावरण, विभिन्न प्रकार की वनस्पति और जीव–जन्तु तथा सदभावनापूर्ण मानवजातीय जीवन को प्रतिविम्बित करता है।

असम की झांकी में पुरुष और महिला सात्रियां नर्तकों को मूर्ति रूप में प्रदर्शित किया गया है जिन्हें संगीतज्ञ एवं ड्रमवादक घेरे हुए हैं। मध्य भाग में विशिष्ट नामघर को दिखाया गया है जहां पर स्थानीय लोग नाम कीर्तन कर रहे हैं। स्थानीय और प्रवासी पक्षी द्वीप के परिवेश को सुसज्जित करते हैं। झांकी के पिछले भाग में एक विशिष्ट मिशिंग घर और उसके दरवाजे पर खड़ी एक मिशिंग लड़की और आंगन में कुछ स्थानीय पेड़ों को दर्शाया गया है।

–असम

Incredible Majuli

Assam tableau depicts Majuli - the world's largest inhabited riverine island and the seat of Vaishnavite culture, promulgated in the 16th century by Vaishnava Saint Srimanta Sankardeva.

The island of Majuli houses 24 Satras – the famous Vaishnava monasteries of Assam. These Satras preserve valuable manuscripts and are a living embodiment of Vaishnava culture. Majuli is also enriched by the vibrant and multi-coloured culture of its ethnic inhabitants belonging to Mising, Deori, Sonowal and Kachari communities. The sublime and serene atmosphere of Majuli attracts plenty of birds, both local and migratory. This mystical island resonates with spiritual and cultural heritage, an idyllic atmosphere, a variety of flora and fauna and a harmonious ethnic life.

The Assam tableau depicts the sculptural form of a male and female Sattriya Dancer with musicians & drummers encircling them. The middle portion displays a typical Namghar where the local people are performing Naam Kirtans. The local and Migratory birds in and around adorn the surroundings. The rear portion of the Tableau depicts a typical Mishing house with a Mishing girl standing on the doorstep and some locally grown trees at the backyard.

–ASSAM

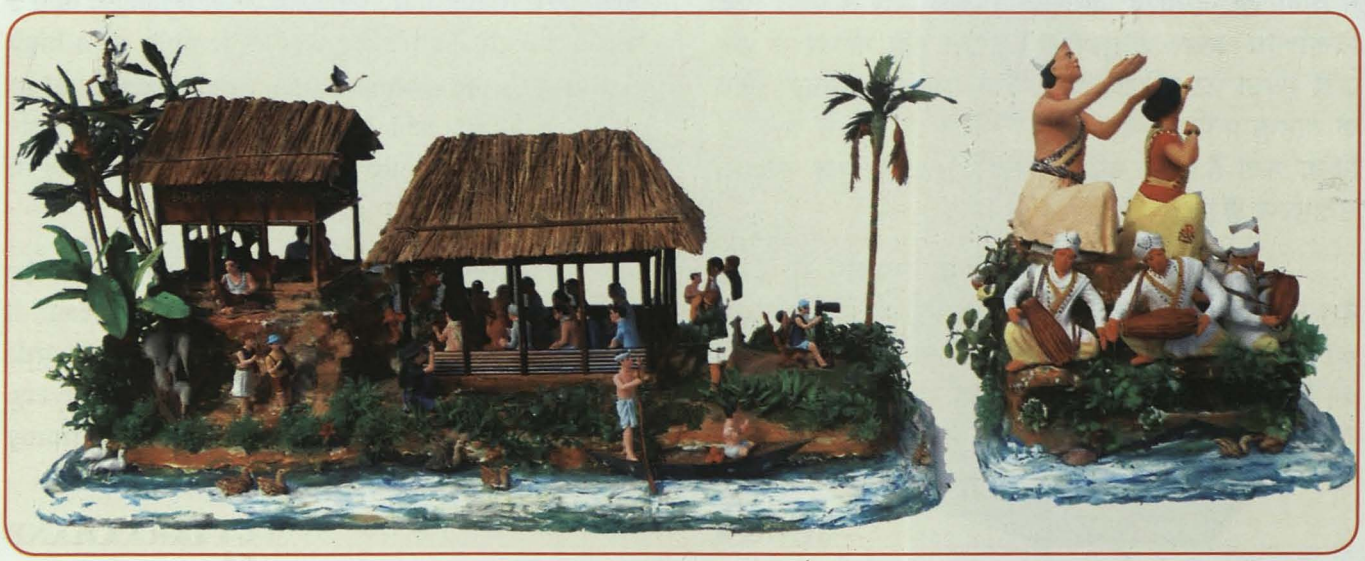

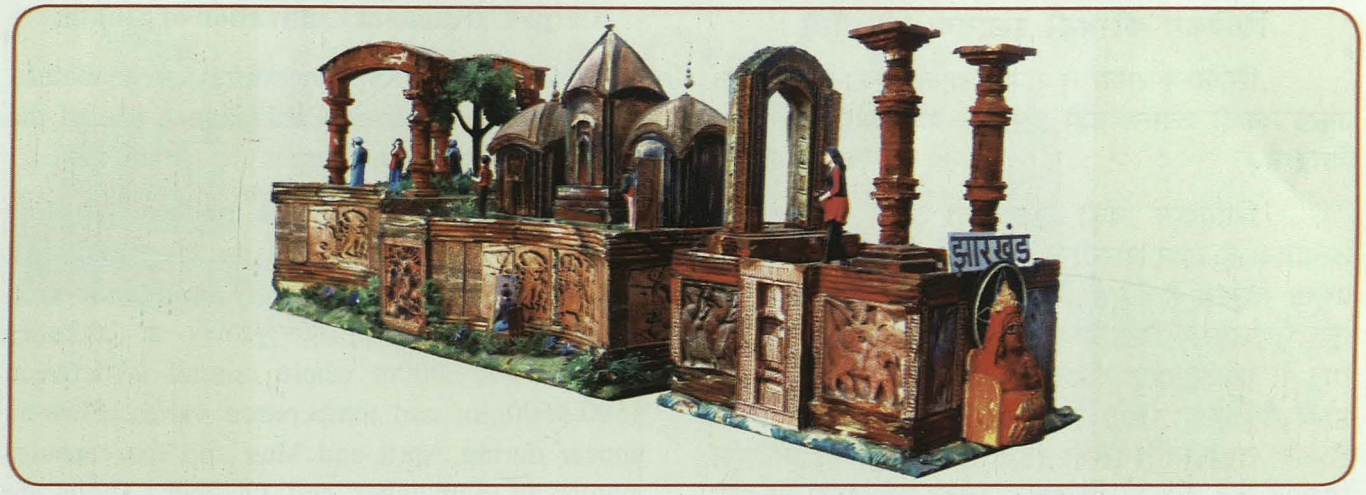

मलूटी मन्दिर

झारखंड राज्य की झांकी संथाल परगना के जंगलों के अन्दर और पहाड़ी भू–भागों में स्थित प्रागैतिहासिक ग्राम मलूटी के अद्वितीय मन्दिरों का दृश्य प्रस्तुत कर रही है। वास्तुशिल्पीय रूप से वैभवपूर्ण और पक्की मिट्टी की मूर्तियों के लिए सुप्रसिद्ध मलूटी के ये मन्दिर अध्ययन और आकर्षण के विषय हैं।

मलूटी एक समय में धार्मिक क्रियाकलाप और सांस्कृतिक रासमंच का केन्द्र स्थल था। इसके 108 मन्दिर विभिन्न पंथों के सह–अस्तित्व और आत्मसात्करण को प्रदर्शित करते हैं। मलूटी मन्दिर की कला की सर्वाधिक उत्कृष्ट विशेषता 'वज्रलेप' के रूप पहचान बनाए हुएं स्थानीय जड़ी–बूटियों से निर्मित पेस्ट से चिपकाई गई भित्ति मूलभावों पर तैयार की गई पक्की मिट्टी या मृत्तिका की प्रतिमाएं हैं। इन अलंकारिक टेराकोटा मूलभावों में धार्मिक और धर्म निरपेक्ष दोनों विषय समाहित हैं, जो सम्प्रदायों और आस्थाओं के सम्मिश्रण को प्रदर्शित करता है।

झारखंड की इस झांकी में 'झोपड़ी' शैली (जिसे अब मलूटी शैली कहा जाता है) मलूटी के मन्दिरों के समूह, उनकी पेचीदा पक्की मिट्टी की कला जो उसकी समग्र संस्कृति को दर्शाती है और देवी मौलीक्षा की मूर्ति जिसके नाम पर गांव को नाम दिया गया है, को दर्शाया गया है। इस झांकी में रामलीला, कृष्णलीला, राम–रावण युद्ध, महिसासुर मर्दिनी, हल चलाते हुए किसान, गाय दूहता हुआ और शिकार करते संथाल की महत्वपूर्ण अलंकारिक मूर्तियों की प्रस्तुति है। इस झांकी के साथ अंगनई नृत्य को प्रस्तुत करते हुए पच्चीस कलाकार झारखंड के बसंत ऋतु लोक गीत को पेश कर रहे हैं।

–झारखंड

Maluti Temples

Jharkhand State presents the tableau of unique temples of the pre-historic village of Maluti, located in the interiors of the jungles and hilly tracts of Santhal Pargana. The temples of Maluti – famous for architecturally splendid and intricate terracotta sculptures, are a subject of study and attraction.

Maluti was once the centre of religious activity, cultural centreity (Ras-Manch). Its 108 temples reflect co-existence and assimilation of different sects. The most outstanding feature of Maluti Temple art is the terracotta or clay images found on mural motifs fixed with a paste made of local herbs known as "Vajralep". These decorative terracotta motifs contain themes – both religious and secular that represents a fusion of cults and beliefs.

The Jharkhand tableau depicts the "Hut" style (now called Maluti Style) cluster Temples of Maluti, their intricate terracotta art, representing its composite culture and a figure of Devi Mauliksha from whose name the village name has been derived. Ramleela, Krishnaleela, Ram-Raavan war, Mahisasur-Mardini, Ploughing-farmer, Man milking cow and hunting Santhal are important decorative motifs on display. Twenty-five Anganai dance performers, accompanying the Tableau, represent the Vasant Ritu folklore of Jharkhand.

–JHARKHAND

20

सिक्किम की बड़ी इलायची की खेती

सिक्किम राज्य ने अपनी झांकी में राज्य की एक प्रमुख नकदी फसल–बड़ी इलायची की खेती को चित्रित किया है।

सिक्किम बड़ी इलायची का सबसे बड़ा उत्पादक है तथा भारतीय और वैश्विक बाजार का एक प्रमुख हिस्सा है। यह सिक्किम में उगाई जाने वाली एक पूर्णतया जैविक फसल है। इसकी पैदावार समुद्र तल से 600–2000 मीटर की ऊँचाई वाले स्थानों पर होती है, जहां 1500 से 3500 मिलीमीटर वर्षा होती है और तापमान बदलता रहता है। अप्रैल–मई में फूल दिखाई देते हैं और सितम्बर–अक्तूबर में दानों से भरी इलायची तैयार हो जाती है। यहां बड़ी इलायची की मुख्य छः किस्में रामसे, रामला, सॉनी, वर्लङगे, सेरेमना और जोङगू गोल्से पाई जाती हैं।

इस झांकी की पृष्ठभूमि में इलायची के खेतों के साथ परम्परागत लेप्चा घर द्वारा इलायची की खेती करते हुए दर्शाया गया है। अग्र भाग में लेप्चा महिला की विशालकाय मूर्ति दर्शाई गई है जो परम्परागत टोकरी में पकी हुई इलायची को ले जा रही है। सिक्किम के कुछ मुख्य समुदाय – भुटिया, लेप्चा और नेपाली हैं जिन्हें परम्परागत वेशभूषा में इलायची सुखाने की प्रक्रिया के साथ, इलायची की खेती में व्यस्त प्रदर्शित किया गया है। अपनी रंग–विरंगी वेशभूषा में कलाकार झांकी के साथ–साथ लेप्चा समुदाय के परम्परागत नृत्य को दर्शाने के लिए नृत्य करते हुए देखे जा सकते हैं।

–सिक्किम

Large Cardamom Cultivation of Sikkim

The State of Sikkim portrays in its tableau the cultivation of large Cardamom – one of the main cash crops of the state.

Sikkim is the largest producer of large Cardamom, constituting a major share of Indian and world market. It is purely an organic crop cultivated in Sikkim. It grows at altitudes between 600-2000m where rainfall is between 1500-3500mm and temperature varies. Flowers appear during April and May and the capsules mature in September and October. There are mainly six popular cultivars of large cardamom viz., Ramsey, Ramla, Sawney, Varlangey, Seremna and Dzongu Golsey.

The Tableau depicts the cardamom cultivation by showing a cardamom field with traditional Lepcha house in background. The front part shows larger than life statue of a Lepcha lady, carrying ripe cardamom in a traditional basket. Some major communities of Sikkim – Bhutia, Lepcha and Nepali, have been represented in their traditional attire, engaged in Cardamom cultivation, along with drying process of cardamom. Artists in their colourful attire can be seen dancing alongside the tableau, to showcase the traditional dance of the Lepcha community.

– SIKKIM

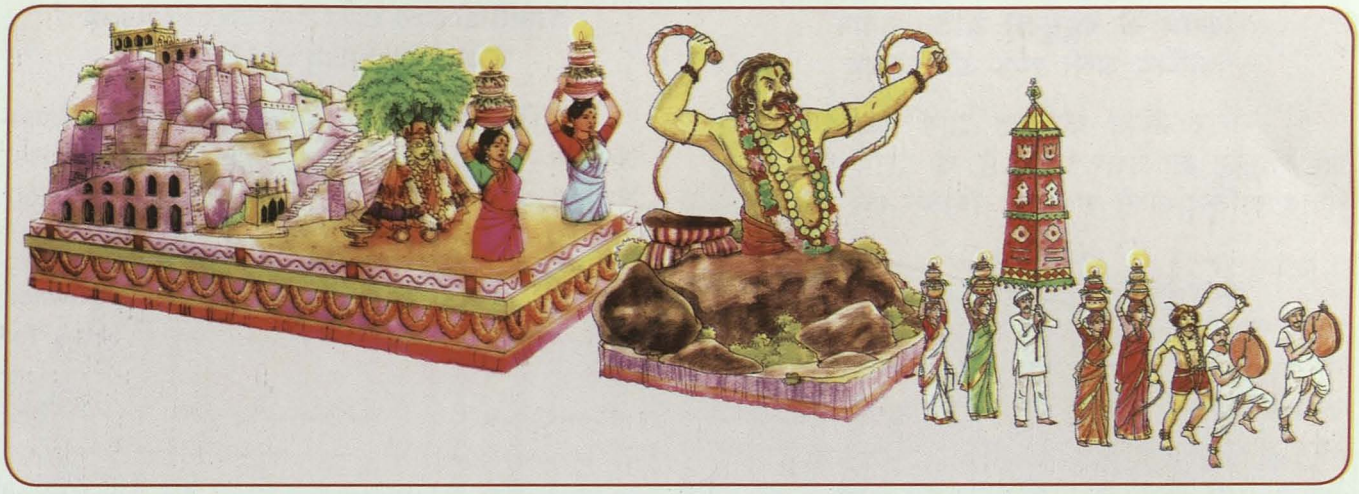

बोनालू

नवनिर्मित्त राज्य तेलंगाना अपनी इस झांकी के माध्यम से राज्य के सुविख्यात उत्सव बोनालू को प्रस्तुत कर रहा है।

बोनालू उत्सव इस क्षेत्र की मातृदेवी महांकाली की पूजा अर्चना करने के लिए आसाढ़ (जुलाई–अगस्त) के माह में मनाया जाता है। बोनम–भोजन मातृदेवी का चढ़ावा होता है। महिलाएं नीम की पत्तियों, हल्दी और सिंदूर से सजाए हुए मिट्टी के नए पात्र में दूध एवं गुड़ के साथ चावल पकाती हैं और पात्र के ऊपर प्रज्वलित दीपक रखती हैं। रंगम, जो भविष्यवाणी करने की एक लोकप्रिय घटना है, इस त्योहार का एक आकर्षण होता है।

तेलंगाना की यह झांकी गोलकुण्डा दुर्ग को चित्रित कर रही है जहां से यह उत्सव एक जुलूस के रूप में प्रारंभ होता है। अद्वितीय वेशभूषा के साथ जीवंत संरक्षक पोथाराजू को चाबुक चलाते हुए जुलूस का नेतृत्व करते हुए दिखाया गया है जिनमें अधिकतर महिलाएं हैं। जुलूस में शामिल लोगों को पारंपरिक संगीत यंत्रों को बजाते हुए देखा जा सकता है। पारंपरिक वेशभूषा में महिलाएं इस झांकी की शोभा बढ़ा रही हैं। वे आने वाले वर्ष के लिए भविष्यवाणी करने की प्रथा निष्पादित करने के लिए देवी महांकाली का आह्वान करती हैं। बोनालू का यह उत्सव मानव के प्रकृति और दैवीय तत्वों के साथ पावन संबंध की अभिव्यक्ति का द्योतक है।

–तेलंगाना

BONALU

The newly born state of Telangana displays on its tableau, Bonalu, a famous festival of the State.

Bonalu is celebrated in the month of Ashada (July/August) to worship Goddess Mahankali, the divine Mother Goddess of the region. Bonam – the meal, is an offering to the Mother Goddess. Women prepare rice cooked with milk and jaggery in new earthen pots adorned with Neem leaves, turmeric and vermillion and keep lighted diyas on top of the pot. Rangam, a fortune telling event, stands out as an attraction in the festival.

The tableau of Telangana portrays the Golkonda Fort from where the festival starts in a procession. Potharaju, the vibrant protector with his unique attire and lashing whips leads the procession consisting mostly of young women. The participants in the procession are seen playing traditional musical instruments. Traditionally dressed women adorn the tableau. They invoke Goddess Mahankali, to perform the custom of fortune telling the year ahead. The festival of Bonalu manifests the relation of human beings with nature and the divine elements.

–TELANGANA

22

अवध के बहुमुखी अंतिम नवाब वाजिद अली शाह और कथक

उत्तर प्रदेश की यह झांकी अवध रियासत जो वर्तमान का उत्तर प्रदेश है, के दसवें और अंतिम नवाब वाजिद अली शाह को चित्रित कर रही है।

नवाब वाजिद अली शाह का 1847 में अवध के नवाब के रूप में राज्याभिषेक किया गया था और उन्होंने नौ वर्षों तक अवध पर शासन किया। वे एक कुशल कवि, नर्तक और ललित कलाओं के सच्चे संरक्षक थे। स्वयं ईश्वर प्रदत्त संगीतज्ञ होने के नाते उन्होंने अपने दरबार में संगीत, नृत्य, रंगशाला तथा काव्य रचना को बढ़ावा दिया। वह उस समय के अनेक सुप्रसिद्ध उस्तादों द्वारा गायन कला में प्रशिक्षित थे। भारतीय शास्त्रीय नृत्य विधा– कथक को पुनर्जीवित करने का श्रेय भी उन्ही को दिया जाता है। यह कहा जाता है कि कथक नृत्य उस समय अस्तित्व में आया जब नवाब वाजिद अली शाह ने अवध के मंदिरों में कथकली नृत्य रूप का मंचन करवाया। उनको 'जोगी' और 'शाह पसंद' जैसे रागों का रचनाकार भी माना जाता है।

उत्तर प्रदेश की यह झांकी अवध के बहुमुखी नवाब को नर्तकों द्वारा प्रस्तुत किए जा रहे कथक नृत्य का आनंद लेते हुए चित्रित कर रही है। झांकी के पश्च भाग में नवाब वाजिद अली शाह को उनके अनुयायियों के साथ हाथी पर सवार होकर कलकत्ता जाते हुए दिखाया गया है।

–उत्तर प्रदेश

Multifaceted Last Nawab of Awadh Wajid Ali Shah and Kathak

The tableau of Uttar Pradesh portrays Nawab Wajid Ali Shah – the tenth and last Nawab of Awadh province – present day Uttar Pradesh.

Nawab Wajid Ali Shah who was crowned as Nawab of Awadh in 1847, ruled over Awadh for nine years. He was an accomplished poet, dancer and a staunch patron of fine arts. Being a gifted musician himself, he allowed music, dance, theatre and poetry to flourish in his court. He was trained in vocal music by several renowned Ustads of the time. The credit of reviving the Indian classical dance form, Kathak, also goes to him. It is said that Kathak came to existence when Nawab Wajid Ali Shah staged Kathakali, a dance form performed in the temples of Awadh. He is also believed to be the composure of Ragas like 'Jogi' and 'Shah Pasand'.

The tableau of Uttar Pradesh portrays the multifaceted Nawab of Awadh enjoying Kathak, being performed by dancers. The rear part of the tableau shows Nawab Wajid Ali Shah on the way to Calcutta on an elephant with some of his followers.

–UTTAR PRADESH

23

जम्मू और कश्मीर के लोक नृत्य

जम्मू और कश्मीर अपनी प्राकृतिक सुंदरता के साथ–साथ अपने पारंपरिक नृत्यों के लिए भी प्रसिद्ध है। ये पारम्परिक नृत्य राज्य की समृद्ध संगीतमय विरासत और सांस्कृतिक धरोहर को प्रतिबिम्बित करते हैं। यहाँ के लोग अनेक लोक नृत्यों के साथ अपने उत्सवों को मनाकर इन प्राचीन परम्पराओं को संजोए हुए हैं। ये लोक नृत्य 'अनेकता में एकता' के संदेश को संप्रेषित करते हैं।

कुद नृत्य फसलों, जानवरों और बच्चों की सुरक्षा के लिए देवता के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए जम्मू के मध्य–पर्वतीय भू–भागों में किया जाने वाला एक विशिष्ट सामुदायिक नृत्य है। रौफ नृत्य सभी त्यौहारी अवसरों– विशेष रूप से रमजान और ईद के दिनों की संध्या पर किया जाता है। पुष्प नृत्य कारगिल लद्दाख क्षेत्र की नोभरा घाटी, शकर चिकतन तथा मुल्वेक क्षेत्रों में लोकप्रिय है। इस नृत्य में इस क्षेत्र के युवा अपने हाथों में पुष्पगुच्छों के साथ उत्सवी माहौल में गाना गाते हैं एवं नृत्य करते हैं।

जम्मू और कश्मीर की यह झांकी पारम्परिक वेषभूषा में जम्मू क्षेत्र के कुद नृत्य, कश्मीर के रौफ नृत्य और लद्दाख के पुष्प नृत्य की प्रदर्शन–मंजूषा है।

–जम्मू और कश्मीर

Folk Dances of Jammu and Kashmir

The state of Jammu and Kashmir is famous for its scenic beauty and also for its traditional dances. These traditional dances reflect the rich musical heritage and cultural legacy of the State. People cherish these age old traditions by celebrating their festivals with a number of folk dances. These folk dances convey the message of 'Unity in Diversity'.

Kud dance is a typical community dance performed in the middle mountain ranges of Jammu to express gratitude to the deity for protecting crops, cattle and children. Rouff dance is performed on all festive occasions - particularly on the evenings of Ramzan and Eid days. Flower dance is popular in the valley of Nobra, Shakar-Chiktan and Mulbek areas of Kargil Ladakh. In this dance, the youth of the area sing and dance in a festive mood with bunches of flowers in their hands.

The tableau of Jammu & Kashmir showcases the Kud dance of Jammu region, Rouff dance of Kashmir and Flower dance of Ladakh in traditional attire.

–JAMMU AND KASHMIR

सुल्तानपुर पक्षी अभ्यारण्य

हरियाणा की झांकी सुल्तानपुर पक्षी अभ्यारण्य को प्रदर्शित करती है जो कि एक लोकप्रिय पक्षी अभ्यारण्य है। हरियाणा सरकार द्वारा इसे राष्ट्रीय पार्क के रूप में घोषित किया गया है।

हरियाणा राज्य के गुड़गांव जिले में स्थित सुल्तानपुर पक्षी अभ्यारण्य पक्षी–विहार के लिए आदर्श है। इसे शीत ऋतु में देखना श्रेष्ठ है जब दूरवर्ती शीतोष्ण क्षेत्रों से अप्रवासी पक्षी बड़ी संख्या में यहां आते हैं। सुल्तानपुर पक्षी अभ्यारण्य में पक्षियों की लगभग 250 प्रजातियां देखी जा सकती हैं। इनमें से कुछ प्रवासी हैं जबकि अन्य प्रजातियां अप्रवासी हैं। प्रत्येक वर्ष अप्रवासी पक्षियों की 100 से अधिक प्रजातियां भोजन स्थलों की तलाश में और शीत ऋतु व्यतीत करने के लिए सुल्तानपुर में आती हैं। सर्दियों में सुल्तानपुर पक्षी अभ्यारण्य में साइबेरियन क्रेन, ग्रेटर फ्लेमिंगों, रफ, ब्लैक विंग्ड स्टिल्ट, कॉमन टील, कॉमन ग्रीन शैंक, नार्दन पिन टेल, येलो और वाइट वॉगटेल, नार्दन शॉवलर, रोजी पेलिकन, गेडवॉल, वुड एंड स्पॉटेड सेंडपाइपर, ब्लेक टेल्ड गॉडविट, स्पॉटेड रेड शैंक और लॉंग बिल्ड पिपिट जैसे प्रवासी पक्षी अति मनोरम दृश्य प्रस्तुत करते हैं।

झांकी में पक्षियों के प्राकृतिक वास को प्रदर्शित किया गया है जहाँ विविध पक्षी देखे जा सकते हैं। पर्यटकों और पक्षी–प्रेमियों को प्रकृति और स्थलीय और जलचर जीव जंतुओं का आनन्द उठाते हुए देखा जा सकता है।

–हरियाणा

Sultanpur Bird Sanctuary

The tableau of Haryana presents a model of the Sultanpur Bird Sanctuary – a popular Bird Sanctuary. It has been declared as a National park by the Government of Haryana.

Sultanpur Bird Sancutary, located in Gurgaon district in the state of Haryana, is ideal for birding. It is best visited in winters when a large number of migratory birds come here from distant temperate regions. About 250 species of birds can be seen at Sultanpur Bird Sanctuary. Some of them are resident, while others are migratory. Every year, more than 100 migratory bird species arrive at Sultanpur in search of feeding grounds and to pass the winter. In winter, Sultanpur Bird Sanctuary provides a picturesque panorama of migratory birds such as Siberian Cranes, Greater Flamingo, Ruff, Black winged Stilt, Common Teal, Common Greenshank, Northern Pintail, Yellow & White Wagtail, Northern Shoveler, Rosy Pelican, Gadwall, Wood & Spotted Sandpiper, Black tailed Godwit, Spotted Redshank and Long billed Pipit.

The tableau showcases a bird habitat where a variety of birds can be seen. Tourists and bird watchers can be seen enjoying nature and a variety of terrestrial and aquatic fauna.

–HARYANA

25

बस्तर का अद्वितीय दशहरा उत्सव

छत्तीसगढ़ राज्य की झांकी बस्तर के अद्वितीय दशहरा उत्सव का चित्रण है। यह उत्सव अपने गैर–पारंपरिक धार्मिक अनुष्ठानों के कारण बिल्कुल भिन्न है। यह उत्सव अयोध्या में भगवान राम की विजयी वापसी के स्थान पर बस्तर की दंतेश्वरी देवी की 'रथ यात्रा' से सम्बद्ध है।

जाति और पंथ की सीमा से उठकर सहभागिता की अटूट भावना इस 75 दिवसीय लंबे उत्सव की विशेषता है। सभी ग्रामों के भक्तगण दंतेश्वरी मंदिर पर एकत्र होते हैं तथा देवी से शक्ति प्राप्ति हेतु प्रार्थना करते हैं।

इस झांकी के अग्र–भाग में दंतेश्वरी देवी की 'बीसन–श्रृंग मारिया' के विशालकाय मॉडल और माता दंतेश्वरी देवी की प्रतिकृति की प्रस्तुति की गई है, जबकि पिछले भाग में पुरातन रूप में रथ और एक धार्मिक अनुष्ठान जिसमें 'मीरगिन–महरा' की एक बालिका से 'यात्रा' प्रारंभ करने के लिए लोगों को अनुमति मांगते हुए चित्रित किया गया है। झांकी के साथ जनजातीय नृत्य मंडली को मुंडा बाजा बजाते हुए और मारिया नृत्य प्रस्तुत करते हुए चित्रित किए गए हैं।

–छत्तीसगढ

Unique Dussehra Festival of Bastar

The tableau of Chhattisgarh depicts the unique Dussehra festival of Bastar. This festival is quite distinct owing to its unconventional rituals. It is associated with the 'Rathyatra' of Goddess Danteshwari Devi of Bastar instead of the triumphant return of Lord Rama to Ayodhaya.

The underlying spirit of participation, cutting across caste and creed that prevails is the distinctive feature of this 75-day long festival. Deities from all villages congregate at Danteshwari temple to pray to obtain power from the Goddess.

The front-side of the tableau depicts a giant model of 'Bison-horn Maria' and replica of Goddess Danteshwari Devi, while the rear part shows the chariot bearing a primitive look and a ritual in which people are seeking permission for starting the 'yatra' from a girl belonging to 'Mirgin-Mahra'. The tableau is accompanied by the tribal dance troupe playing Munda Baja and performing the Maria dance.

–CHHATISGARH

इगू नृत्य – पुजारी का नृत्य

अरूणाचल प्रदेश की यह झांकी इदू मिशमी जनजाति का अद्वितीय धार्मिक नृत्य, जिसका आशय 'पुजारी का नृत्य' है, को प्रस्तुत करती है।

इदू मिशमी जनजाति के लोग अपनी अनोखी वेषभूषा और बुनाई के कौशल के लिए सुविख्यात हैं। वे विभिन्न आत्माओं को शांत करने के उद्देश्य से और सामाजिक कल्याण और परिवार की समृद्धि के लिए अनेक अवसरों जैसे कि रेह उत्सव, विभिन्न धार्मिक अनुष्ठानों इत्यादि पर इगू नृत्य करते हैं।

यह झांकी इगू (पुजारी) को अर्ध–चक्रीय रूप में चार या पांच नर्तकों के साथ गाना गाते हुए और अपने ड्रम को बजाते हुए चित्रित करती है। वे लयबद्ध गीत गाते हैं, जिसका साथी नर्तक अनुसरण करते हैं।

–अरूणाचल प्रदेश

Igu Dance - Dance of the Priest

The tableau of Arunachal Pradesh presents the unique ritual dance of the Idu Mishmi tribe, meaning 'Dance of the Priest'.

The people of Idu Mishmi Tribe are well-known for their unique costumes and weaving skills. They perform Igu dance on various occasions such as Reh Festival, different rituals, etc, with the objective of appeasing various spirits and for social well-being and prosperity of family.

The tableau displays the main performers, called Igu, singing and beating their drums, accompanied by four or five dancers in a semi-circular pattern. They sing rhythmic songs which the accompanying dancers follow.

–ARUNACHAL PRADESH

27

पंढरपुर की वारी

महाराष्ट्र राज्य की झांकी इस राज्य की सुविख्यात परंपरागत तीर्थयात्रा – पंढरपुर की वारी को चित्रित करती है। यह तीर्थ यात्रा सदियों पुरानी सामाजिक और सांस्कृतिक धरोहर है जो विशेष रूप से महाराष्ट्र, कर्नाटक और आंध्र प्रदेश आदि राज्यों के लाखों भक्तगणों को आकर्षित करती है। भक्त आलंदी से पंढरपुर तक की 200 कि.मी. की पदयात्रा भक्तिभाव, धार्मिक गीतों (अभंग) को गाते हुए हर्षोल्लास से पूरा करते हैं।

पंढरपुर एक पवित्र स्थल है जहां पर भगवान विठोबा का मंदिर है। यह तीर्थयात्रा किसानों, श्रमिकों एवं अन्य व्यक्तियों, विशेष रूप से सभी वर्गों' और समुदायों की महिलाओ, द्वारा संपन्न की जाती है जो ज्ञानोबा–तुकाराम का जयघोष करते हुए 21 दिवसों की यात्रा में भाग लेते हैं। समूचा तीर्थस्थल धर्मोपदेशों, भक्ति गीतों और पारंपरिक क्रीड़ाओं से गुंजायमान हो जाता है।

प्रस्तुत झांकी के अग्रभाग में एक महिला को अपने सिर पर तुलसी पात्र (वृंदावन) के साथ चित्रित किया गया है। झांकी के मध्य में पंढरपुर के प्रसिद्ध विट्ठल मंदिर को प्रदर्शित किया गया है। भक्तगण वृहत मानवीय चक्रों का निर्माण करते हैं और अश्व पालकी के साथ परिक्रमा में दौड़ते हैं। परिक्रमा के इस अनुष्ठान को भक्तों की जीवन प्रणाली का प्रतीक स्वरूप समझा जाता है जिसे इस झांकी में बखूखी प्रस्तुत किया गया है। इस झांकी के अंत में संत ज्ञानेश्वर और संत तुकाराम जिन्हें वारकरी संप्रदाय द्वारा उच्च सम्मान दिया जाता है, की प्रतिमाएं प्रतिस्थापित हैं।

–महाराष्ट्र

The Wari to Pandharpur

The Maharashtra tableau displays the illustrious traditional pilgrimage of the state - the Wari to Pandharpur, an age old social and cultural event that attracts lakhs of devotees speciallyfrom the state of Maharashtra, Karnataka and Andhra Pradesh who walk joyously with devotion, chanting religious songs (Abhang) to perform the 200 km walk from Aalandi to Pandharpur.

Pandharpur is the holy site where the shrine of God Vithoba is located. The pilgrimage is undertaken by peasants, workers and women from all sections and communities, who participate in large numbers chanting Dynoba-Tukaram for 21 days. The entire pilgrimage is marked by sermons, devotional songs and traditional games.

The front part of the tableau displays a woman with a pot (Vrindavan) of Tulsi on her head. The middle portion depicts the famous Vitthal Temple of Pandharpur. Devotees make large human circles and run around in circles with the horse's palanquin. This act of circum-ambulation is considered as the symbolic form of our life process which is represented on the tableau. The last part contains the idols of Saint Dyaneshwar and Saint Tukaram who are held in high esteem by the Warkari Sect.

–MAHARASHTRA

28

सरदार सरोवर योजना और स्टेच्यू ऑफ युनिटी

गुजरात राज्य ने अपनी गणतंत्र दिवस परेड की झांकी के द्वारा भारत के लौह पुरूष – सरदार वल्लभभाई पटेल को श्रद्धांजलि अर्पित की है। झांकी में सरदार सरोवर योजना जो कि नर्मदा नदी पर बना एक अंतर्राज्यीय बहु–उद्देशीय परियोजना है और जो गुजरात राज्य में समृद्ध ता की वाहक बनी है, को भी दर्शाया गया है।

महान देशभक्त सरदार पटेल अपने दृढ़ निश्चय और संकल्प से भारत को एक नया आकार और शक्ति प्रदान करने के लिए 562 रियासतों को मुख्यधारा में लाए थे। सरदार सरोवर परियोजना का पानी राज्य की ऊसर भूमि को तृप्त करने, सिंचाई में वृद्धि करने और गुजरात तथा पड़ोसी राज्यों के लोगों का जीवन स्तर उन्नत करने में सहायक हुई है।

झांकी का अग्र भाग सरदार पटेल के राष्ट्र–निर्माण में योगदानों को शाश्वत करने के लिए 182 मी. ऊँची लौह प्रतिमा जिसे 'स्टेच्यू ऑफ यूनिटी' नाम दिया गया है, की प्रतिकृति को प्रदर्शित करता है। प्रतिमा का निर्माण गुजरात के नर्मदा जिले के केवडिया में सरदार सरोवर बांध के साधु बेट पर किया जा रहा है। झाँकी में खुशहाल किसानों को सरदार सरोवर की नहर के आस–पास हरे खेतों को गाहते हुए अपनी प्रचुर फसल पैदावार पर हर्षोल्लास व्यक्त करते हुए देखा जा सकता है। झांकी के पिछले भाग में समृद्धता से ओत–प्रोत खुशहाल युगल दर्शाये गये हैं साथ ही सरदार सरोवर बांध से गिरता हुआ एक सुन्दर झरना प्रदर्शित किया गया है।

–गुजरात

Sardar Sarovar Yojana and the Statue of Unity

The State of Gujarat pays tribute to India's Iron man – Sardar Vallabhbhai Patel, through their Republic Day Parade tableau which also depicts the Sardar Sarovar Yojana – the inter-state multi-purpose project near river Narmada that has ushered prosperity in the state.

Sardar Patel – the ardent patriot, with his determination and resolve, integrated 562 princely states into the mainstream to give India a new shape and strength. The waters of the Sardar Sarovar Yojana quench the parched inlands of the state, increase irrigation and help in raising the standard of living of the people of Gujarat and the neighbouring states.

The front part of the tableau displays a replica of Sardar Patel's 182m tall, iron statue – named the "Statue of Unity" that is being built at Sadhu Bet in Sardar Sarovar Dam at Kevadia in Narmada district of Gujarat, to commemorate the contributions of Sardar Patel in nation-building. Alongside, happy farmers can be seen threshing, the rich farms surrounding the Sardar Sarovar's canal, rejoicing their rich crop. Statues of happy couples, basking in prosperity and a beautiful waterfall flowing down the Sardar Sarovar dam exhibit the rear portion of the tableau.

–GUJARAT

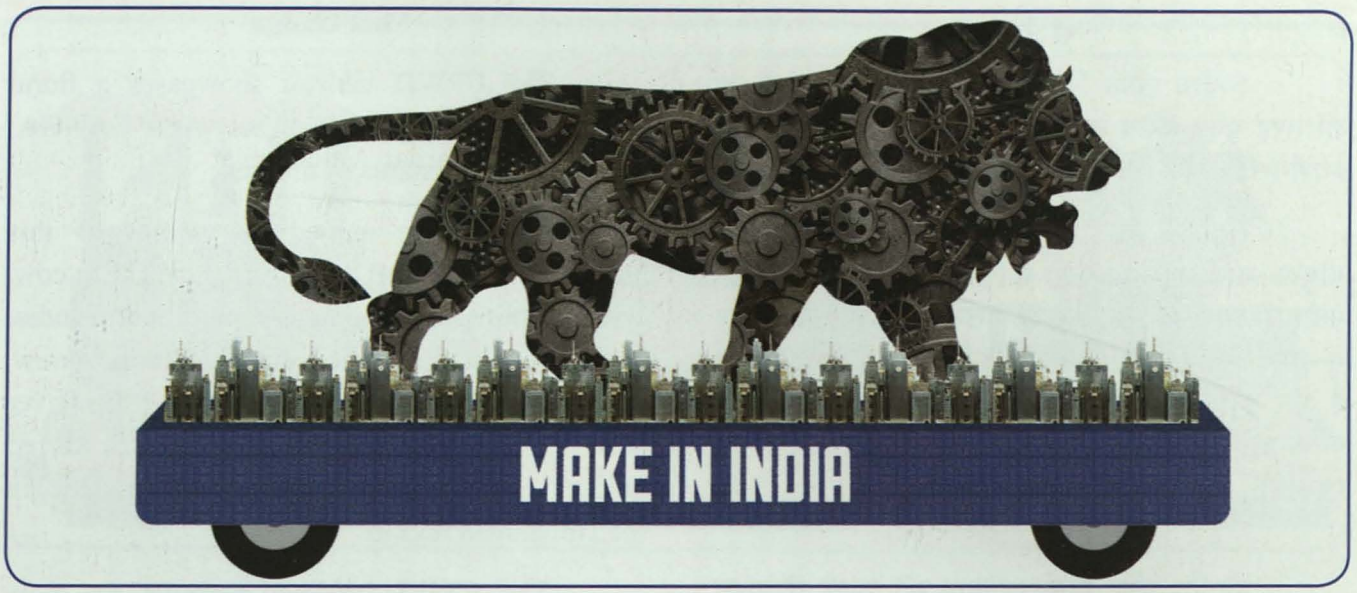

मेक इन इंडिया

औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग की झांकी भारत को निवेश के क्षेत्र के रूप में प्रक्षेपित करने और इसे एक विनिर्माण केंद्र के रूप में परिवर्तित करने के लक्ष्य के साथ 25 सितंबर, 2014 को शुरू की गई भारत सरकार की पहल 'मेक इन इंडिया' को प्रदर्शित करती है।

'मेक इन इंडिया' पहल का उद्देश्य भारत में विनिर्माण करने के लिए उद्यमियों को सुविधा प्रदान कराना है। भारतीय अर्थ–व्यवस्था के विकास को प्रोत्साहन देने और रोजगार के अधिक अवसर सृजित करने के उद्देश्य से इस पहल में विनिर्माण में दो अंकीय विकास की प्राप्ति हेतु प्रयास किया गया है।

'मेक इन इंडिया' झांकी में एक स्मार्ट सिटी की पृष्ठभूमि में एक यांत्रिक शेर को स्थापित किया गया है जिससे यह स्पष्ट संदेश प्रेषित हो कि वैश्विक विनिर्माण केंद्र के रूप में परिवर्तित होने के लिए भारत के पास आवश्यक प्रयोजन, संसाधनों, सहभागिता और गतिशीलता की शक्ति है। इस झांकी में निवेश के लिए पहचान किए गए विभिन्न क्षेत्रों को भी प्रदर्शित किया गया है। आधुनिक, गतिशील और प्रगतिशील भारत के हमारे ऐतिहासिक गौरव को प्रतीक के रूप में चक्रों सहित शेर के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। ग्राफिक चित्रों के रूप में आगे बढ़ने की भावना और विनिर्माण तत्वों का प्रयोग ब्रांड इंडिया के पुनर्जन्म को दर्शाता है।

–औद्योगिक नीति और संवर्धन विभाग

Make in India

The tableau of Department of Industrial Policy and Promotion showcases the 'Make in India' initiative of the Government of India, launched on 25th September, 2014, with an objective to project India as an investment destination and to transform it into a manufacturing hub.

The 'Make in India' initiative aims at facilitating entrepreneurs to manufacture in India. In order to boost the growth of Indian economy and create more employment opportunities, the initiative endeavours to achieve a double-digit growth in manufacturing.

The 'Make in India' tableau depicts a mechanized Lion, set against the backdrop of a smart city, to convey a clear message that India has the strength of purpose, resources, partnerships and the momentum required for transformation into a global manufacturing hub. The tableau also showcases various sectors identified for investment. The Lion along with wheels to symbolize our historical pride with a modern, dynamic and progressing India. The sense of forward movement and use of manufacturing elements as graphic texture denote re-birth of Brand India.

–DEPTT OF INDUSTRIAL POLICY & PROMOTION

30

मां गंगा

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की यह झांकी मां की तरह पूज्य पवित्र नदी गंगा के उद्गम–स्थल के पुष्प प्रदर्शन को दर्शाती है।

संतों ने इस पवित्र नदी के उद्गम का नाम गौमुख–गाय का मुख रखा है। गौमुख सौन्दर्यपरक और मनोहारी दृश्य के लिए प्रसिद्ध उत्तर भारत का एक सुन्दर भू–दृश्य है। गंगोत्री हिमनद भागीरथी नदी का उद्गम है और इसकी पूजा भारत में एक पवित्र स्थल के रूप में की जाती है। यह हिमालय क्षेत्र के बेहतरीन दृश्यों में से एक है।

केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग की झांकी हिमालय के रास्तों से प्रवाहित होती हुई मां गंगा के पवित्र उद्गम–गौमुख और गंगा नदी को चित्रित करती है। इस झांकी के अग्रभाग में एक विशाल कलश रखा है जिसमें गंगा नदी का पवित्र जल – गंगा जल रखा है जिसमें उपचारी शक्तियाँ होने का विश्वास किया जाता है। मध्य भाग में गंगोत्री मन्दिर को प्रदर्शित किया गया है। रंग–बिरंगी झांकी प्राकृतिक फूलों का प्रचुर मात्रा में प्रयोग करके तैयार की गई है जिससे अत्यधिक मनोरम अनुभव मिल सके।

–केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग

Maa Ganga

The CPWD tableau showcases a floral presentation of the source of holy river GANGA, revered with the status of mother.

Sages have named the source of this holy river as GAUMUKH – the mouth of a cow. Gaumukh is a beautiful landscape of North India, renowned for aesthetic and panoramic view. The Gangotri glacier is the source of the River Bhagirathi, and is revered in India as a sacred place. It is one of the most spectacular sights in the Himalayan region.

The CPWD tableau portrays the holy source of Maa Ganga - the Gaumukh and the River Ganga, flowing through the reaches of Himalaya. The tableaux leads with a huge Kalash – containing Gangajal, the holy water of river Ganga, believed to possess the healing powers. The middle portion displays the Gangotri Temple. The colourful tableau has been crafted by making lavish use of natural flowers, to give an extremely aesthetic experience.

–CENTRAL PUBLIC WORKS DEPTT.

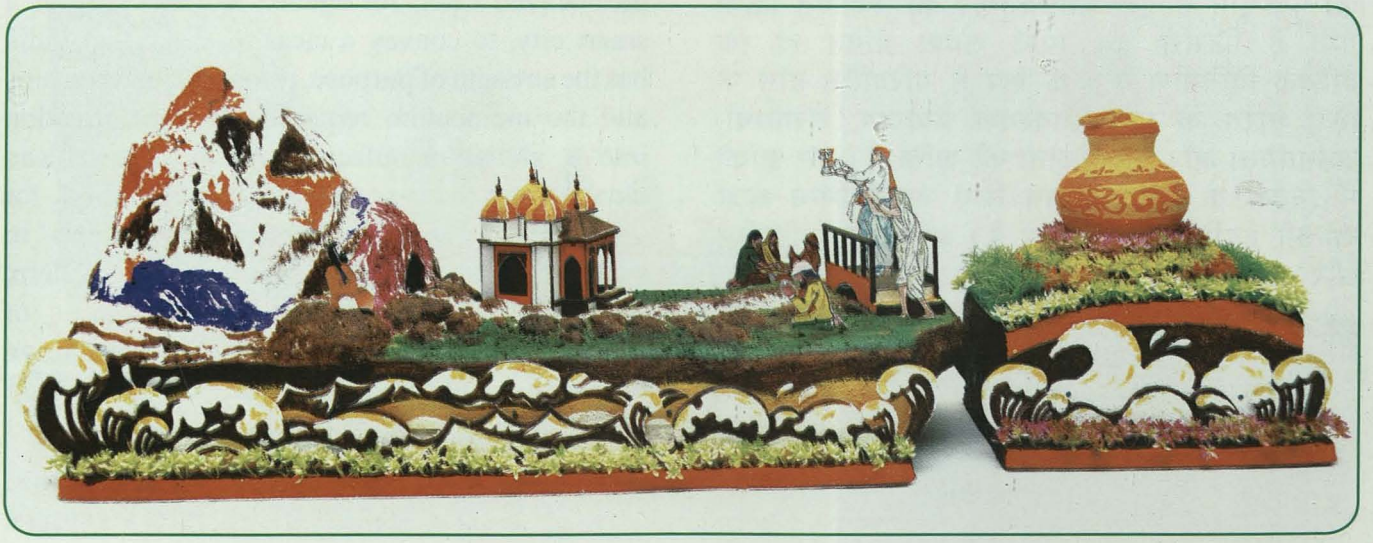

31

आयुष सर्वांगीण स्वास्थ्य परिचर्या

आयुष भारतीय चिकित्सा पद्धतियों और होम्योपैथी के लिए एक संक्षिप्त नाम है जिसमें आयुर्वेद, योग, प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्ध और होम्योपैथी शामिल हैं। सोवा रिग्पा चिकित्सा पद्धति आयुश परिवार में हाल ही में शामिल हुई है। संयुक्त राष्ट्र द्वारा 21 जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के रूप में घोषणा के साथ योग को वैश्विक मान्यता प्रदान की गई है। इस झांकी में चिकित्सा की प्राचीन और पारंपरिक पद्धतियों के विकास में आयुष मंत्रालय की उपलब्धियां उजागर की गई हैं।

आयुष की झांकी के अग्रभाग में पांच योगाचार्यों को विभिन्न योगासनों में दिखाकर योग पद्धति को दर्शाया गया है। उसके उपरांत वर्म और थोक्कनम थैरेपी करते और यूनानी चिकित्सा पद्धति के माध्यम से रोगी की जांच करते हुए एक 'हकीम' देखे जा सकते हैं। झांकी के पिछले भाग में पंचकर्म थैरेपी के रूप में आयुर्वेद पद्धति को दर्शाया गया है। होम्योपैथी पद्धति को झांकी के चारों ओर चीनी की सफेद गोलियों वाली औषधीय बोतलों के रूप में दिखाया गया है। झांकी में विभिन्न खाद्य पदार्थों को भी दर्शाया गया है जो पोषण और स्वास्थ्य परिचर्या के लिए प्राकृतिक चिकित्सा में सुझाए जाते हैं। प्रसिद्ध आयुष औषधियां जो सामान्य रूप से प्रयोग होने वाले औषधीय पौधे हैं, को भी झांकी में दिखाया गया है।

–आयुश मंत्रालय

AYUSH Holistic Healthcare

AYUSH is an acronym for the Indian Systems of medicine and homeopathy and includes Ayurveda, Yoga, Naturopathy, Unani, Siddha and Homeopathy. Sowa Rigpa system of medicine is the latest entrant in the AYUSH family. Yoga has been accorded Global recognition with United Nations declaring 21st June as the International Day of Yoga. The achievements of Ministry of AYUSH in development of ancient and traditional systems of medicines have been highlighted in the tableau.

The AYUSH tableau depicts Yoga system in the front with five Yogaacharyas performing various Yogasanas. Next to it an artist is performing Varma & Thokkanam therapy, and a 'Hakim' - examining a patient through the Unani system of medicine. The rear part of the tableau displays the Ayurveda system in the form of Panchakarma therapy. The Homeopathy System is depicted in the form of the medicine bottles containing white sugar globules, around the tableau. The tableau also displays various food items, which are recommended in Naturopathy for nutrition and healthcare. The models of famous AYUSH medicines which are commonly used medicinal plants, are also seen in the tableau.

–MINISTRY OF AYUSH

32

राष्ट्र की सेवा में परमाणु

परमाणु उर्जा विभाग ने अपने हीरक जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में अपनी झांकी में राष्ट्र की सेवा में सामाजिक लाभों हेतु परमाणु की असीम शक्ति का उपयोग करने की अपनी विशेषज्ञता को प्रदर्शित किया है।

झांकी में सबसे आगे परमाणु कक्ष के ऊपर एक सफेद कबूतर स्थापित है, जो 'शान्ति हेतु परमाणु' के संदेश का प्रसार करने के राष्ट्र के संकल्प का प्रतीक है। यह भारतीय परमाणु कार्यक्रम के जनक स्वप्नदृष्टा डॉ. होमी जहांगीर भाभा को भी एक विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है।

झांकी के पृष्ठ भाग को विभाग की सेवा प्रदेयताओं के साथ–साथ संकल्पनात्मक रूप से शान्ति, प्रगति और समृद्धि को दर्शाते हुए, तीन भागों में विभाजित किया गया है। पहले भाग में चिकित्सा प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में की गई प्रगति को दर्शाया गया है जिसमें स्वदेशी रूप से विकसित 'भाभाट्रान मशीन' दर्शाई गई है जो रेडियो थैरेपी में प्रयुक्त होती है और कम कीमत पर स्वास्थ्य परिचर्या प्रदान कर रही है। इसके बाद का रंग–बिरंगी वनस्पति वाला भाग उत्पत्ति मूलक प्रजनन प्रौद्योगिकी के माध्यम से खाद्यान और कृषि में समृद्धि को चित्रांकित करता है जिसमें रोग–प्रतिरोगी एवं अधिक उपज देने वाले बीजों, खाद्यान उत्पादों की शेल्फ आयु बढ़ाने वाली खाद्य – किरणन तकनीक को प्रदर्शित किया गया है। अंतिम भाग में शान से खड़ा है हमारा स्वदेशी परमाणु रिएक्टर, जो राष्ट्र की सतत् प्रगति हेतु स्वच्छ और हरित उर्जा की असीमित आपूर्ति प्रदान करने में परमाणु ऊर्जा के फायदों को दर्शाता है।

–परमाणु उर्जा विभाग

Atoms in the Service of the Nation

Celebrating its diamond jubilee year, the Department of Atomic Energy portrays in its tableau, its expertise in harnessing the tremendous potential of the atom for societal benefits in the service of the nation.

The tableau is led by a white dove atop an atomic orbital symbolising the conviction of the nation to spread the message - 'Atoms for Peace'. It also pays a sombre homage to the visionary Dr. Homi Jehangir Bhabha, founding father of the Indian Nuclear Programme.

The trailer portion is conceptually divided into three parts depicting peace, progress and prosperity, vis-à-vis the service deliverables of the Department. The first part symbolises progress in the field of medical technology depicting the indigenously developed 'Bhabhatron' machine, used in radio-therapy and delivering affordable healthcare. The colourful flora, following it, picturises prosperity in food and agriculture through mutation breeding technology to provide disease resistant and high yielding seeds; food irradiation techniques that increase the shelf life of the produce. Lastly, standing tall, the indigenous Nuclear Reactor showcases the advantage of nuclear energy to provide an unlimited supply of clean and green energy for the sustained progress of the nation.

–DEPARTMENT OF ATOMIC ENERGY

33

एक मॉडल ग्राम पंचायत

पंचायती राज मंत्रालय की झांकी वर्तमान समय के एक मॉडल ग्राम पंचायत के माध्यम से भारतीय गांवों के बदलते स्वरूप को दर्शाती है।

पंचायती राज प्रणाली निर्णय प्रक्रिया में लोगों की बेहतर भागीदारी, ग्रामीण विकास कार्यक्रमों के प्रभावी कार्यान्वयन और ग्रामीण जीवन की सांस्कृतिक जीवंतता को संरक्षित करने के साथ–साथ सभी प्रकार की नागरिक सुविधाएं प्रदान करना सुनिश्चित करता है। इस प्रणाली में ग्राम स्तर पर वास्तविक लोकतंत्र की रचना करने और पंचायती राज प्रणाली के माध्यम से लोगों को अधिकार प्रदान करने के महात्मा गांधी के सपने को साकार करने का सामर्थ्य है।

झांकी में प्रदर्शित विषयों में सक्रिय ग्राम सभा का संचालन करने वाले कारक ई–पंचायत (ई–ग्राम), स्कूल इमारत, स्वयं सहायता समूह, ग्रामीण खेल–कूद और पंचायती राज प्रणाली के माध्यम से पेयजल आपूर्ति, जन वितरण प्रणाली, समुदाय–निर्माण जैसी सुविधाएं आदि शामिल हैं, जो ग्रामीण भारत की शक्ति – निचले स्तर पर शासन की शक्ति को प्रदर्शित करता है।

–पंचायती राज मंत्रालय

A Model Gram Panchayat

The tableau of Ministry of Panchayati Raj portrays the changing face of the Indian villages through a model Gram Panchayat System.

Panchayati Raj system ensures greater participation of people in decision making, more effective implementation of rural development programmes and to provide all civic amenities while preserving the cultural vibrance of village life. The system has the potential to create genuine democracy at the grassroots village level and realize Mahatma Gandhi's dream of empowering people through the Panchayati Raj system.

The tableau presents a theme that includes elements of conduction of an active Gram Sabha, ePanchayat (eGram), a school building, Self Help Groups, Rural Sports and other amenities like drinking water supply, PDS, Community building, etc. through Panchayati Raj system which represents the strength of rural India - the power of grass root governance.

–MINISTRY OF PANCHAYATI RAJ

34

न्यायपथ

विधि एवं न्याय मंत्रालय की यह झांकी राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण के माध्यम से भारत में विधिक सेवा प्राधिकरणों की विभिन्न उपलब्धियों पर प्रकाश डाल रही है।

विधिक सेवा प्राधिकरण, लोक अदालतों और विधिक सेवा क्लिनिकों तथा सहायता केन्द्रों के द्वारा देश के नागरिकों को न्याय उपलब्ध कराने के लिए समान अवसर प्रदान करने हेतु प्रयासरत है। लोक अदालत एक अनौपचारिक मंच है जो आगे और अपीलों के बिना विवादों के तत्काल, सौहार्दपूर्ण और निःशुल्क समाधान उपलब्ध कराने में सहायता करता है। ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित विधिक सेवा क्लिनिक, ग्राम विधिक सहायता और समर्थन केन्द्र ग्रामीण और वंचित जनसंख्या के लिए न्याय को सुगम बनाते हैं। कारागारों में, विधिक सेवा क्लिनिकों के पैनलबद्ध वकील और स्वयंसेवी, हिरासत में बंद लोगों को कानूनी सहायता उपलब्ध कराते हैं और न्यायालयों में मुकदमे से संबंधित मामलों के निपटान में उनकी सहायता करते हैं।

प्रस्तुत झांकी लोक अदालत के सत्र को न्यायालय के लक्षण के बिना ही न्यायालयी आधारभूत संरचना में प्रस्तुत कर रही है। यह झांकी ग्राम विधिक सहायता और समर्थन केन्द्र पर सुलह के प्रयासों और कारागार में जागरूकता सत्र का भी चित्रण कर रही है जिसमें वकील और पैरा विधिक स्वयंसेवी जो स्वयं भी कारागर में शिक्षित होते हैं, के द्वारा कारागार में सजा काट रहे कैदियों को उनके कानूनी अधिकारों के बारे में शिक्षित किया जा रहा है।

–विधि एवं न्याय मंत्रालय

Walk For Justice

The tableau of Ministry of Law and Justice through the National Legal Services Authority highlights various achievements of the Legal Services Authorities in India.

Legal Service Authorities strive to provide equal opportunity to secure justice to all the citizens of the country, through Lok Adalats, Legal Services Clinics and Support Centres. Lok Adalat is an informal forum that facilitates quick, amicable and cost free resolution of disputes, without further appeals. Legal Services Clinics, Village Legal Care and Support Centres, set up in rural areas, provide easy access to justice to the rural and marginalized population. In jails, panel lawyers of the Legal Service clinics and volunteers provide legal assistance to the people in custody and help the inmates in following up the matters connected with their litigation in courts.

The tableau portrays a Lok Adalat in session in court infrastructure, without having the character of a court. The tableau also shows conciliation efforts at a Village Legal Care and a Support Centre and an awareness session in a jail, where the inmates are being educated about their legal rights by the visiting lawyer and a Para Legal Volunteer who is himself an educated inmate of jail.

–MINISTRY OF LAW AND JUSTICE

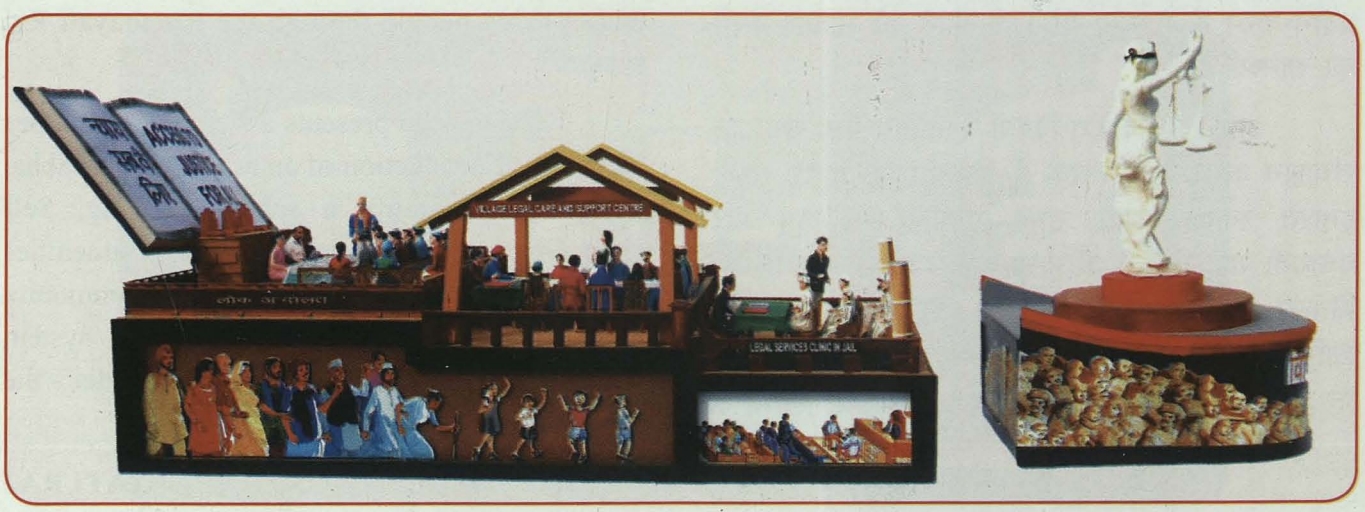

बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ – भविष्य हमारा है

झांकी का विषय– बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ दर्शाता है कि भविष्य हमारी बेटियों का है, जो जीवन में कुछ भी और सब कुछ हासिल कर सकती हैं। झाँकी दर्शाती है कि महिलाएं अनेक कार्यों में पारंगत होती हैं। एक राष्ट्र के रूप में हमें अपनी बेटियों की प्रतिभा को प्रोत्साहित करते हुए उनके सपनों और आकांक्षाओं को पूरा करने हेतु प्रेरित करना चाहिए।

झांकी के पहले भाग में एक बालिका गुलाबी साड़ी में चोटी बांधकर बैठी हुई दर्शाई गई है। वह अपने दाहिने हाथ में एक संदेश ऊपर उठाए हुए है जिसमें वह भविष्य के लिए अपनी भाव–व्यंजनाओं, अपने दृढ़–निश्चय और आकांक्षाओं को प्रदर्शित कर रही है।

झाँकी के एक महत्वपूर्ण दृश्य में लोगों को घर में कन्या का जन्म होने पर खुशी व्यक्त करते हुए हर्षोल्लास से लोहड़ी का पर्व मनाते हुए दिखाया गया है। परंपरागत रूप से भारत के कई भागों में बेटी के जन्म पर प्रसन्नता नहीं मनाई जाती है। बेटी के जन्म का लोहड़ी के उत्सव पर उल्लास तथा परिवार में बालिका के आगमन का स्वागत समाज की एक सकारात्मक विचारधारा को दर्शाता है। इस झांकी के दोनों ओर बारह लड़कियों का मार्च, जीवन के हर क्षेत्र में महिलाओं की उपलब्धि का प्रतीक है जो दर्शाता है कि अपने चरित्रबल और मेहनत के बल पर, महिलाएं जीवन के हर क्षेत्र में सफलता प्राप्त कर सकती हैं और उनके लिए कोई भी कार्य अप्राप्य नहीं है।

–महिला और बाल विकास मंत्रालय

Beti Bachao Beti Padhao - Bhavishya Hamara Hai

The theme of the tableau - Beti Bachao Beti Padhao, depicts that the future belongs to our daughters who can achieve anything and everything in life. It shows women are multi taskers and that we, as a nation, should encourage the talent of our daughters and nurture their dreams and aspirations.

The first part of the tableau displays a girl sitting in a pink sari with braided hair. She holds the message in her right hand aloft, conveying with her expressions her determination and aspirations for the future.

An important depiction on the tableau is the celebration of the birth of a daughter on Lohri. Traditionally, in many parts of India, birth of a daughter is not celebrated. Celebration of Lohri to mark the birth of a daughter is a positive reinforcement in society that a girl child is welcomed in the family. The twelve girls marching on each side of the tableau symbolize the omnipresence of women in every walk of life. It reflects that with their grit and hard work, women can achieve success in every field of life, and no task is unattainable for them.

–MINISTRY OF WOMEN AND CHILD DEVELOPMENT

प्रधान मंत्री जन–धन योजना

वित्त मंत्रालय (वित्तीय सेवाएं विभाग) की झांकी माननीय प्रधान मंत्री द्वारा दिनांक 28 अगस्त, 2014 को प्रारंभ की गई 'प्रधान मंत्री जन–धन योजना' (पीएमजेडीवाई) – वित्तीय समावेशन संबंधी एक राष्ट्रीय मिशन को प्रदर्शित करती है जिसका उद्देश्य सम्पूर्ण देश में प्रत्येक परिवार के पास जमा, बीमा और पेंशन सुविधा आदि लाभ उठाने हेतु कम से कम एक बेसिक बैंक खाता उपलब्ध कराना है।

यह झांकी विशालकाय संरचनाओं, 3–डी चित्रों और स्वाँग प्रदर्शनों इत्यादि की सहायता से इस योजना की एक स्पष्ट छवि प्रस्तुत करती है। स्वाँग कलाकार भाषा संबंधी बाधाओं से परे हटकर प्रधान मंत्री जन–धन योजना की विभिन्न विशेषताओं को व्यक्तिगत रूप से प्रस्तुत कर रहे हैं। इस योजना का लाभ उठाते हुए विभिन्न जाति और पंथ के लोगों का समूह, महिलाएं और युवा बैंक पासबुकों, रूपे डेबिट कार्डों और बेसिक मोबाइल फोन इत्यादि का प्रदर्शन करते हुए देखे जा सकते हैं।

प्रतिमाओं के द्वारा मोबाइल के प्रयोग से धन के लेन–देन की प्रक्रिया की बहुत सुंदर ढंग से परिकल्पना की गई है। झांकी के पिछले भाग में एक स्वर्णिम वृक्ष दिखाया गया है जिसके प्रत्येक पत्ते पर बचत, सरल–अन्तरण, कर्ज, बीमा और पेंशन जैसी योजना के विशेष लाभ समाहित हैं। किनारे लगे पैनल समाज के निम्न आय वर्ग के सदस्यों को इस योजना के लाभों पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए दर्शाए गए हैं।

–वित्त मंत्रालय

Pradhan Mantri Jan-Dhan Yojna

The tableau of Ministry of Finance (Department of Financial Services) highlights the "Pradhan Mantri Jan-Dhan Yojana" (PMJDY) – a National Mission on financial inclusion launched by Hon'ble Prime Minister on 28 August 2014 with an objective to have at least one basic bank account per household across the country to avail credit, insurance, pension and other facilities.

The tableau conveys a clear picture of the Scheme with the help of larger than life structures, 3D pictures, Mime show, etc. The mime actors illustrate individually various features of the PMJDY, transcending the language barriers. Group of people from different castes and creeds, women and youth can be seen displaying bank passbooks, RuPay Debit cards, basic mobile phone, etc, rejoicing in the benefits of the Scheme.

Money transaction through mobile is conceptualized through sculptures. In the rear part of the tableau, a golden tree is shown where every leaf contains a particular benefit of the Scheme like saving, easy transfer, loan, insurance and pension. Side panels show people of low income groups working happily depicting the speedy reach of the scheme across different sections of the Society.

–MINISTRY OF FINANCE

37

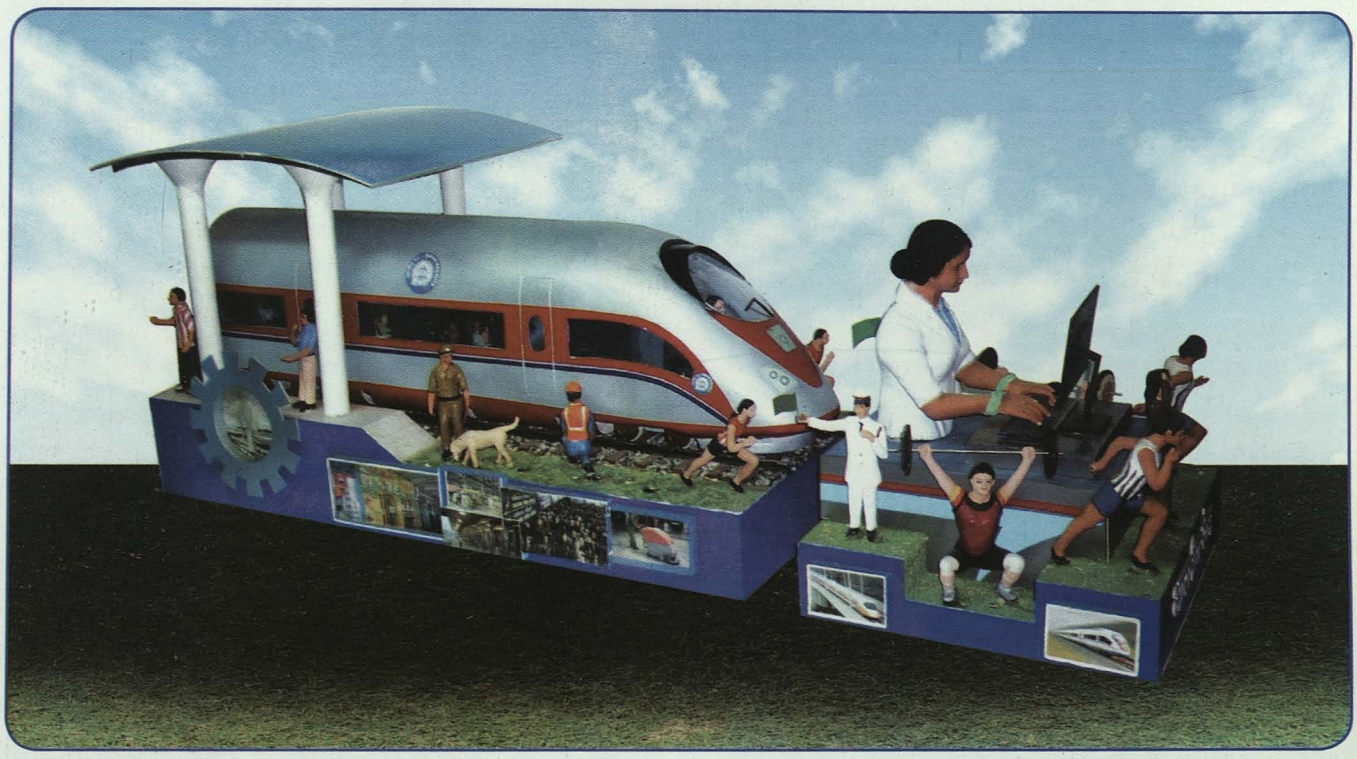

भारतीय रेल –
भविष्य के द्रुतगामी पथ पर

झांकी में हाई स्पीड ट्रेन, स्टेशन की आधारभूत संरचना और यात्री टर्मिनलों के माध्यम से इस क्षेत्र में रूपान्तरकारी बदलाव लाने में तथा महिला सशक्तिकरण के क्षेत्र में भारतीय रेल की प्रगति को प्रदर्शित किया गया है।

भारतीय रेल लैंगिक समानता को प्रोत्साहन देती है। इस झांकी के माध्यम से यह दर्शाने का प्रयास किया गया है कि रेलवे में महिलाओं का सशक्तीकरण किया गया है। अब उनका ऐसे कार्यों के लिए भी चयन किया जा रहा है जिनके लिए केवल पुरूषों को ही योग्य समझा जाता था। अधिकाधिक महिलाओं को गाड़ी चालक, स्टेशन मास्टर, तकनीकी फिटर, गार्ड के रूप में और रेल सुरक्षा बल (रे.सु.ब.) में भी नियुक्त किया जा रहा है।

झांकी में एक तेज रफ्तार वाली रेलगाड़ी को प्रदर्शित किया गया है – जिसका डिजाइन विश्व की मौजूदा हाई स्पीड ट्रेनों पर आधारित है। परिवहन का सबसे सस्ता साधन होने के कारण, भारतीय रेल आम आदमी की आवश्यकताओं को पूरा करती है।

–रेल मंत्रालय

Indian Railways -
On a Fast Track to the Future

The Indian Railways' progress in bringing about transformative changes in the sector through high speed trains, station infrastructure and passenger terminals and in the field of women empowerment has been presented in the tableau.

Indian Railways promotes gender equality. The tableau endeavours to show that women are empowered in the Railways. They are now being selected for jobs for which only males were considered earlier. Women are increasingly being employed as train drivers, station masters, technical fitters, guards and in the Railway Protection Force (RPF).

The tableau showcases a high speed train-the design of which is based on existing high speed trains of the world. Being the most economical means of transport, Indian Railways caters to the need of common man.

–MINISTRY OF RAILWAYS

राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार 2014 के विजेता

नाम	राज्य
कुमारी रेशम फातमा@	उत्तर प्रदेश
कुमारी गुंजन शर्मा*	असम
मास्टर देवेश कुमार**	उत्तर प्रदेश
मास्टर रूमो मीतो***	अरूणाचल प्रदेश
स्व. कुमारी रिया चौधरी***	उत्तर प्रदेश
स्व. कुमारी मोनिका उर्फ मनीषा***	उत्तराखण्ड
कुमारी ज़ील जितेन्द्र मराठे	गुजरात
मास्टर साहनेश आर.	कर्नाटक
कुमारी अश्विनी बंडु उघड़े	महाराष्ट्र
मास्टर एल. ब्रेनसन सिंह	मणिपुर
कुमारी रीपा दास	त्रिपुरा
मास्टर बलराम डनसेना	छत्तीसगढ़
मास्टर हीरल जीतूभाई हलपति	गुजरात
मास्टर राजदीप दास	झारखंड
मास्टर अंजित पी.	केरल
मास्टर अकिल मोहम्मद एन. के.	केरल
मास्टर मिधुन पी. पी.	केरल
मास्टर जी. तूलदेव शर्मा	मणिपुर
मास्टर स्टीवेंसन लारिनियाँग	मेघालय
स्व. मास्टर मेसक के. रेमनाललङह्का	मिजोरम
कुमारी मोनबेनी इजुंग	नागालैंड
मास्टर लाभांशु	उत्तराखण्ड
स्व. मास्टर गौरव कुमार भारती	उत्तर प्रदेश
मास्टर विशाल बेचरभाई कटोसना	गुजरात

@ भारत पुरस्कार
* गीता चोपड़ा पुरस्कार
** संजय चोपड़ा पुरस्कार
*** बापू गायधानी पुरस्कार

Winners of the National Bravery Award 2014

Names	State
Km. Resham Fatma@	Uttar Pradesh
Km. Gunjan Sharma*	Assam
Master Devesh Kumar**	Uttar Pradesh
Master Rumoh Meto***	Arunachal Pradesh
Late Km. Riya Chaudhary***	Uttar Pradesh
Late Km. Monika @ Manisha***	Uttarakhand
Km. Zeal Jitendra Marathe	Gujarat
Master Sahanesh.R	Karnataka
Km. Ashwini Bandu Ughade	Maharashtra
Master L. Brainson Singh	Manipur
Km. Ripa Das	Tripura
Master Balram Dansena	Chhattisgarh
Master Hiral Jitubhai Halpati	Gujarat
Master Rajdeep Das	Jharkhand
Master Anjith. P	Kerala
Master Aqil Mohammad N.K.	Kerala
Master Midhun P.P.	Kerala
Master G. Tooldev Sharma	Manipur
Master Stevenson Lawriniang	Meghalaya
Late Master Mesak K. Remnalalnghaka	Mizoram
Ms. Mhonbeni Ezung	Nagaland
Master Labhanshu	Uttarakhand
Late Master Gaurav Kumar Bharti	Uttar Pradesh
Master Vishal Becharbhai Kotosana	Gujarat

@ Bharat Award
* Geeta Chopra Award
** Sanjay Chopra Award
*** Bapu Gaidhani Award

बच्चों की प्रस्तुति

गुजरात के डांग आदिवासियों का होली नृत्य

कुनबी–कोंकण जनजाति गुजरात के दक्षिणी भाग में डांग क्षेत्र के मूल निवासी हैं। यह समुदाय रंगों के त्यौहार– होली और अपने विवाह समारोहों के अवसर पर डांग आदिवासी होली नृत्य का आयोजन करता है। यह नृत्य युवा पुरूषों और स्त्रियों द्वारा अपने वाद्य–यंत्रों सनोई, काहल्या और ढोलकी के साथ किया जाता है। इस नृत्य प्रस्तुति के अति रोमांचक क्षण में वे अपनी प्रसन्नता व्यक्त करने के लिए एक पिरामिड का निर्माण करते हैं।

–पश्चिमी क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, उदयपुर

गोंधल नृत्य

बालिकाएं महाराष्ट्र के गोंधल नृत्य को प्रस्तुत कर रही हैं जो कि एक शैक्षणिक, मनोरंजक और महत्वपूर्ण परंपरा है। ऐसा माना जाता है कि यदि विवाह और जनेऊ संस्कार जैसे मांगलिक अवसरों के दौरान घर में गोंधल नृत्य किया जाता है तो हमारा जीवन अव्यवस्थित नहीं होता। गोंधल महाराष्ट्र की उन कुछ महत्वपूर्ण लोक कलाओं में से एक है जो लोगों की जीवन शैली का अविभाज्य अंग बन गया है। कुछ अनुसंधानकर्ताओं ने यह सिद्ध किया है कि गोंधल ऐसी कला है जो उस देवी से संबंधित है जो समग्र सृष्टि और अपने भक्तों को संपूर्ण करती है।

–राजकीय माध्यमिक कन्या विद्यालय, जनकपुरी, दिल्ली

स्वच्छ बनाएं भारत

स्कूली छात्रों द्वारा 'स्वच्छ बनाएं भारत' नृत्य का प्रदर्शन किया जा रहा है जिसमें वे विश्व को संदेश दे रहे हैं कि हम भारतीय संयुक्त प्रयासों से स्वच्छ भारत की एक नई गाथा लिख सकते हैं।

छात्र सभी से देश के प्रत्येक शहर, प्रत्येक पथ और प्रत्येक घर को साफ–सुथरा रखने की अपील कर रहे हैं ताकि भारत धरती पर स्वर्ग की तरह दिखे।

–राजकीय उच्चतर माध्यमिक कन्या विद्यालय, नत्थुपुरा, दिल्ली

Children's Pageants

Daang Adivasi Holi Nritya – Gujarat

Kunabi-Konkana tribes – the inhabitants of Daang region in the Southern part of Gujarat perform the Daang Adivasi Holi Nritya on the occasion of Festival of Colours – Holi and during their wedding ceremonies. This dance is performed by young males and females accompanied by the instruments Sarnai, Kahlya & Dholki. During the peak enthralling moment of their performance, they form a pyramid to express their happiness.

–West Zone Cultural Centre, Udaipur

Gondhal Dance

Girls perform Gondhal dance of Maharashtra which is an educative, entertaining and important tradition. It is believed that if Gondhal is performed in the house during auspicious occasions like wedding & thread ceremony, then life proceeds smoothly. Gondhal is one of the few important folk arts of Maharashtra that has become an inseparable part of the life style of the people.

–Govt. Girls Senior Secondary School, Janakpuri, Delhi

Swachchh Banaye Bharat

School children are performing the "Swachchh Banaye Bharat" dance to showcase to the world that we Indians can create a new era by synergizing a joint effort towards "Clean India".

The students are making a fervent appeal to one and all to make every town, every path and every home in the country neat and clean so that it appears to be a resplendent Heaven on Earth.

–Govt. Girls Senior Secondary School, Nathupura, Delhi

कल हमारा है – मंगलयान

स्कूली बालक एवं बालिकाओं की एक प्रस्तुति जिसमें बहुरंगी वेशभूषा में नृत्य के द्वारा भारत के अंतरिक्ष यान 'मंगल यान' के मंगल ग्रह की कक्षा में सफलता पूर्वक प्रतिस्थापन का समारोह मनाया जा रहा है। उनकी यह सम्मोहक नृत्य प्रस्तुति हर्षोन्माद की अभिव्यक्ति है जिसने हमारी इस आशा और प्रतिबद्धता को सुदृढ़ किया है कि हमारे वैज्ञानिक असीम लगनता तथा कठिन परिश्रम से महान असाधारण कार्यों को अंजाम दे सकते हैं।

–रेड रोजेज पब्लिक स्कूल, साकेत, नई दिल्ली

Kal Hamara Hai – Mangalyaan

A presentation by girls and boys - a dance in multicolour attire to celebrate India's recent successful launching of the spaceship 'Mangalyaan' into the orbit of planet Mars. Their mesmerizing performance is an expression of ecstasy, further reinforcing the hope and promise that greater feats can be accomplished by our scientists through dedication and hard work.

–Red Roses Public School, Saket, New Delhi

लेजिम नृत्य

महाराष्ट्र का लेजिम नृत्य, खेल और क्रीड़ा के प्रकार का एक लोकप्रिय लोक नृत्य है। लेजिम एक प्राचीन खेल है जिसे पेशवा काल में भी खेला जाता था। लेजिम नृत्य साहस और पराक्रम के उल्लास का नृत्य है।

लेजिम झांझ ढोल की धुन पर मुख्यतः त्यौहारों, ग्राम देवता हेतु आयोजित मेलों, गणेश उत्सव और स्वागत समारोहों के दौरान खेला जाता है। इस नृत्य शैली में अनेक शारीरिक व्यायामों का प्रदर्शन किया जाता है।

–दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर

Lezim Nritya

The Lezim Dance of Maharashtra is a popular folk dance in the form of games and sports. Lezim is an old game that was played even during the Peshwa regime. Lezim is a dance form which celebrates martial valour.

Lezim is played on the tune of Zanz Dhol, as it is mainly played during festivals and fairs arranged for the village deity, Ganesh festival and also during welcome functions. In this dance form, many physical exercises are also performed.

–South Central Zone Central Centre, Nagpur

तेजस्वी युवा शक्ति

छात्रों द्वारा 'तेजस्वी युवा शक्ति' नामक एक सम्मोहक नृत्य की प्रस्तुति की जा रही है जिसमें वे हमारे युवाओं को अपनी ऊर्जा, बल और योग्यता से खेल, विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में नई ऊँचाईयों तक पहुँचने पर सलामी दे रहे हैं। ये छात्र इस नृत्य प्रस्तुति के माध्यम से युवाओं की राष्ट्र के शानदार भविष्य के लिए प्रबल इच्छा तथा उनके प्रगतिशील विचारो की सराहना करते हैं।

–केन्द्रीय विद्यालय, आर के पुरम, सेक्टर–8, दिल्ली

Tejasvi Yuva Shakti

Students present a mesmerizing performance titled "Tejasvi Yuva Shakti" to salute our youth, who are continually scaling new heights in the field of sports, science and technology with their potential, energy and strength. These students through their dance performance appreciate the fervent desire of the youth for a glorious future of the country with their innovative and progressive thoughts.

–Kendriya Vidyalaya, R K Puram Sector 8, Delhi

•••

धन्यवाद

Thank You

Designed & Printed at **Chandu Press**
D-97, Shakarpur, Delhi-110092
Ph.: +91-11-22424396, 9810519841
E-mail: chandupress@gmail.com